सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 159 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार 16 जुलाई, 2026
मूल्य ₹ 3/-

ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियों पहले से हमारी हैं। वो हमीं हैं जो अपनी आंखों पर हांथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अन्धकार है।

-स्वामी विवेकानंद

आईसीसी ने जारी किया वनडे विश्वकप का... 7 | महाराष्ट्र में फिर सियासी माहौल... 3 | श्रीराम मंदिर चढ़ावा चोरी से भाजपा... 2

दिल्ली की गद्दी पर अब महाराष्ट्र का दावा ?

सीएम फडणवीस के नाम की गूंज

» मंत्री की राष्ट्रीय नेतृत्व वाली इच्छा और शरद पवार से मुलाकात ने बढ़ाई सियासी हलचल

» सीएम देवेंद्र फडणवीस को देश का नेतृत्व करने का मौका मिलना चाहिए : मंत्री दत्तात्रय भरणे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र के कृषि मंत्री दत्तात्रय भरणे द्वारा भरी सभा में दिये गये बयान ने बीजेपी की आंतरिक राजनीति को गर्म कर दिया है। उन्होंने दिल्ली की गद्दी पर महाराष्ट्र की दावेदारी पेश करते हुए कहा है कि उचित समय पर देश की कमान सीएम फडणवीस के हाथों में होनी चाहिए और वह इसके लिए प्रार्थना करेंगे।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की मौजूदगी में राज्य के कृषि मंत्री दत्तात्रय भरणे ने सार्वजनिक मंच से यह इच्छा जतायी है कि देवा भाऊ को सही समय आने पर देश का नेतृत्व करने का अवसर मिले। यह सिर्फ प्रशंसा थी राजनीतिक शुभकामना थी या फिर एक सोची समझी राजनीतिक संकेत रेखा या फिर महाराष्ट्र की सियासत से ध्यान भटकाने वाला बयान यह देखने वाली बात होगी। लेकिन महाराष्ट्र की राजनीतिक स्थिति और देश के सियासी महौल में इस बयान ने ऐसा विस्फोट किया है कि राजनीति की चूलें हिल गयी है।

फडणवीस क्यों हैं भाजपा के सबसे मजबूत मुख्यमंत्रियों में?

बड़ा सवाल है कि आखिर फडणीस से ज्यादा सीनियर और होनहार नेताओं की फौज होते हुए भी फडणवीस का नाम पीएम मोदी के विकल्प के तौर पर क्यों किया जा रहा है। इस सवाल का सबसे मजबूत जवाब यह हो सकता है कि फडणवीस ने खुद को सभी कौशलों में जस्टिफाई किया है। फ्रंड रेजिंग से लेकर कूटनीति तक और सभी को साथ लेकर चलने का हुनर भी उनको आता है। आर्थिक कैपिटल का तमगा हासिल किये महाराष्ट्र के सीएम होने का उन्हें सबसे बड़ा फायदा यह मिल रहा है कि देश के बड़े बिजनेस ग्रुप का उन्हें सपोर्ट हासिल है और इसके अतिरिक्त फडणवीस युवा है और उसी स्टेट से आते हैं जहां से नितिन गडकरी आते हैं।

कृषि मंत्री दत्तात्रय भरणे ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के लिए की प्रार्थना

मुंबई में भाजपा किसान मोर्चा के कार्यक्रम में कृषि मंत्री दत्तात्रय भरणे ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की मौजूदगी में कहा कि वह भगवान विट्ठल से प्रार्थना करेंगे कि भविष्य में फडणवीस को देश का नेतृत्व करने का अवसर मिले। सामान्य परिस्थितियों में इसे किसी लोकप्रिय मुख्यमंत्री की प्रशंसा माना जा सकता था, लेकिन इसका राजनीतिक महत्व इसलिए बढ़ गया क्योंकि यह बयान ऐसे समय आया जब महाराष्ट्र की राजनीति लगातार नए समीकरणों की चर्चा में है।

भाजपा की राष्ट्रीय राजनीति में कोई औपचारिक बदलाव अभी नहीं

यह कहना जल्दबाजी होगी कि इससे भाजपा की राष्ट्रीय राजनीति में कोई औपचारिक बदलाव का संकेत मिलता है। लेकिन इतना तय है कि महाराष्ट्र से उठी इस आवाज ने राजनीतिक गलियारों में एक नया प्रश्न जरूर खड़ा कर दिया है। क्या यह केवल सम्मान का संबोधन था या भविष्य की संभावनाओं पर शुरू हुई नई राजनीतिक चर्चा इस का जवाब समय देगा लेकिन इतना तय है कि इस बयान ने बीजेपी की भीतर की राजनीति को मथ दिया है। ऐसे कई बड़े चेहरे और नाम है जो पीएम मोदी के विकल्प के तौर पर खुद को परोस रहे हैं। उनमें सबसे बड़ा नाम यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ का भी है। उनके बारे में भी यही कहा जाता है कि आज नहीं तो कल वह देश के प्रधानमंत्री बनेंगे।

पूरे बयान के हैं कुछ मायने

महाराष्ट्र के कृषि मंत्री दत्तात्रय भरणे ने सार्वजनिक रूप से मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को भविष्य में राष्ट्रीय नेतृत्व की भूमिका निभाते देखने की इच्छा व्यक्त की। मुंबई में भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा द्वारा आयोजित एक सम्मान समारोह में सीएम फडणवीस की मौजूदगी में बोलते हुए भरणे ने आषाढ़ी एकादशी के शुभ अवसर का जिक्र करते हुए फडणवीस लिए बड़ी भूमिकाओं की ओर इशारा किया। सभा को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री ने सीएम के योगदान की तारीफ की और कहा कि महाराष्ट्र को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सामूहिक भविष्य के लिए अच्छे नेताओं का महाराष्ट्र में बने रहना जरूरी है लेकिन वे स्वार्थी होकर काम नहीं कर सकते। उन्होंने आगे कहा कि आज महाराष्ट्र दिल्ली की सत्ता से कुछ दूर है। भरणे ने कहा कि आने वाली आषाढ़ी एकादशी पर वे भगवान पांडुरंग (विट्ठल) से सच्चे मन से प्रार्थना करेंगे कि देवा भाऊ देवेंद्र फडणवीस को सही समय पर देश का नेतृत्व करने का मौका मिले। यह कार्यक्रम पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर किसान ऋण माफी योजना की घोषणा के बाद सीएम फडणवीस के सम्मान में आयोजित किया गया था। भरणे ने गठबंधन के कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि वे सुनिश्चित करें कि इस महत्वपूर्ण नीति की जानकारी असली लाभार्थियों तक पहुंचे।

विपक्ष क्या देख रहा है?

महाराष्ट्र से उठी इस सियासी चिंगारी पर विपक्ष ने नजरे गढ़ा दी है। विपक्ष इस घटनाक्रम को एक भावनात्मक बयान मानने के बजाय इसे बीजेपी की अंदरूनी के तौर पर देख रहा है। विपक्षी दलों के लिए यह सवाल खड़ा करने का अवसर है कि आखिर ऐसा कौन सा राजनीतिक माहौल बन रहा है जिसमें किसी मौजूदा मुख्यमंत्री के लिए सार्वजनिक मंच से देश का नेतृत्व करने की कामना की जा रही है। भारतीय जनता पार्टी ने राष्ट्रीय नेतृत्व को लेकर किसी बदलाव का कोई संकेत नहीं दिया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही पार्टी के निर्विवाद राष्ट्रीय नेता हैं। ऐसे में विपक्ष यदि इस बयान को भाजपा के भीतर कथित शक्ति संतुलन या भविष्य की उत्तराधिकार बहस से जोड़ने की कोशिश करता है तो भाजपा का जवाब भी लगभग तय माना जाता है। पार्टी इसे मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के प्रशासनिक कामकाज, राजनीतिक अनुभव और किसानों के लिए गए फैसलों के प्रति एक मंत्री द्वारा व्यक्त सम्मान और शुभकामना का स्वाभाविक प्रकटीकरण बता सकती है। इसके बावजूद राजनीति केवल आधिकारिक बयानों से नहीं चलती, बल्कि संकेतों, प्रतीकों और समय के चयन से भी अपनी दिशा तय करती है। यही वजह है कि शरद पवार से फडणवीस की हालिया मुलाकात और उसके तुरंत बाद राष्ट्रीय नेतृत्व वाली टिप्पणी ने राजनीतिक विश्लेषकों तथा विपक्ष–दोनों को नए सवाल उठाने का मौका दे दिया है। आने वाले दिनों में यदि ऐसे ही स्वर भाजपा के अन्य नेताओं की ओर से भी सुनाई देते हैं तो यह तय माना जना चाहिए कि पीएम मोदी के विकल्प के तौर पर बीजेपी में मंथन शुरू हो चुका है।

असामान्य हलचलों के दौर से गुजरती राजनीति

यह बयान ऐसे समय आया है जब महाराष्ट्र की राजनीति पहले से ही असामान्य हलचलों के दौर से गुजर रही है। कुछ दिन पहले सीएम फडणवीस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष शरद पवार की मुलाकात ने भी राजनीतिक गलियारों में कई तरह की अटकलों को जन्म दिया था। मुलाकात को दोनों पक्षों ने सामान्य बताया लेकिन राजनीति में मुलाकातों से अधिक उनके समय और संदेश को पढ़ा जाता है। ऐसे में जब उसी दौर में एक वरिष्ठ मंत्री सार्वजनिक रूप से फडणवीस को भविष्य के राष्ट्रीय नेतृत्व के रूप में देखने की इच्छा व्यक्त करते हैं तो यह चर्चा केवल महाराष्ट्र तक सीमित नहीं रहती। भारतीय जनता पार्टी के भीतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व निर्विवाद माना जाता है और पार्टी ने किसी नेतृत्व परिवर्तन का कोई संकेत नहीं दिया है। लेकिन राजनीति संभावनाओं, प्रतीकों और संदेशों की भी भाषा होती है। किसी मुख्यमंत्री के लिए राष्ट्रीय भूमिका की सार्वजनिक कामना इसलिए भी चर्चा का विषय बनती है क्योंकि ऐसे बयान सामान्य प्रशासनिक उपलब्धियों की प्रशंसा से कहीं आगे जाते हैं। यह उस राजनीतिक कद की ओर इशारा करते हैं जिसे समर्थक भविष्य में और बड़ा देखना चाहते हैं। महाराष्ट्र लंबे समय से राष्ट्रीय राजनीति की प्रयोगशाला रहा है। यहीं से कई ऐसे नेता निकले जिन्होंने दिल्ली की सत्ता को प्रभावित किया। आज जब फडणवीस लगातार संगठन सरकार और गठबंधन तीनों स्तरों पर भाजपा के सबसे प्रभावशाली चेहरों में गिने जाते हैं तब उनके समर्थन में आया यह बयान स्वाभाविक रूप से राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बन गया है। संबंधित खबरें 3 पर भी

श्रीराम मंदिर चढ़ावा चोरी से भाजपा की कलई खुली : अखिलेश यादव

» बोले-चढ़ावा चोरी के बाद उजागर होंगे भाजपा व संघ नेताओं के काले कारनामे

» प्रशासनिक अक्षमता के कारण विकास योजनाएं भ्रष्टाचार का शिकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने प्रदेश की भाजपा सरकार पर करारा प्रहार जारी है। यूपी के पूर्व सीएम ने पर आरोप लगाते हुए कहा कि राम मंदिर दान चोरी प्रकरण में पार्टी की कलई खुल गई है। साथ ही समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार पर उत्तर प्रदेश को पिछड़ा बीमारू प्रदेश बनाने का आरोप लगाया।

उन्होंने कहा कि प्रशासनिक अक्षमता के कारण विकास योजनाएं भ्रष्टाचार का शिकार हो गई हैं। यादव ने अयोध्या में श्रीराम मंदिर के चढ़ावे की चोरी को भाजपा पर लगा काला दाग बताया।

अखिलेश यादव ने कहा कि एक्सप्रेस-वे बन रहे हैं, पर सड़कें धंस रही हैं। हर तरफ लूट, झूठ और चोरी का चक्र अबाध गति से चल रहा है।

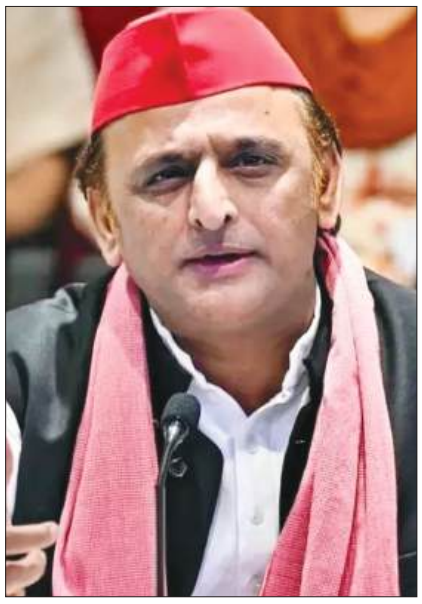

चढ़ावा-चंदा-दान चोरी खुलने के बाद भाजपा, आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद के नेताओं के काले कारनामे उजागर हुए हैं। भाजपा में बदहवासी छा गई है और वह जनता का ध्यान भटकाने के लिए बचकाने बयान दे रही है।,

उत्तर प्रदेश में रथ यात्रा निकालेंगे सपा प्रमुख

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव यूपी चुनाव 27 से पहले 36 साल पुराना इतिहास दोहरा सकते हैं । सूत्रों के मुताबिक अखिलेश यादव उत्तर प्रदेश में रथ यात्रा निकालेंगे। यह रथ यात्रा सितंबर 26 में निकाली जा सकती । बता दें कि साल 1990 के 25 सितंबर में ही राम मंदिर के लिए चर्चित रथ यात्रा निकाली गई थी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव सितंबर के पहले सप्ताह से पूरे प्रदेश में समाजवादी पीडीए रथ यात्रा शुरू करने की तैयारी में हैं। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, इस यात्रा की शुरुआत किसी प्रमुख हिंदू धार्मिक स्थल से किए जाने पर विचार चल रहा है, हालांकि अंतिम स्थान को लेकर पार्टी नेतृत्व अभी मंथन कर रहा है. सूत्रों की मानें तो अखिलेश की रथ यात्रा अयोध्या, मथुरा या काशी से शुरू हो सकती है।

जगन्नाथ यात्रा के लिए दी शुभकामनाएं

अखिलेश यादव ने श्री जगन्नाथजी की रथयात्रा के शुभारंभ पर सभी देशवासियों को शुभकामनाएं दीं।

उत्तर प्रदेश में ईडी ने की बड़ी कार्रवाई

» पीएमएलए के तहत 13 ठिकानों पर मारे छापे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की लखनऊ जोन टीम ने मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में उत्तर प्रदेश में कई ठिकानों पर छापेमारी की है। यह मामला कथित तौर पर टेरर फंडिंग और अवैध घुसपैठ नेटवर्क से जुड़ा है जो लगभग दो साल पहले सामने आया।

अधिकारियों ने बताया कि केंद्रीय एजेंसी के लखनऊ जोनल कार्यालय ने प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत उत्तर प्रदेश और कुछ अन्य जगहों पर लगभग 13 ठिकानों पर छापेमारी की। शुरुआत में उत्तर प्रदेश एटीएस ने इस मामले में एफआईआर दर्ज की थी। मामला मनी लॉन्ड्रिंग से जुड़ा होने के बाद ईडी ने इसे अपने हाथों में लिया। एफआईआर में एक संगठित गिरोह का जिक्र है जो कथित तौर पर रोहिंग्या और बांग्लादेशी नागरिकों की भारत में अवैध घुसपैठ कराने उनके लिए जाली भारतीय पहचान दस्तावेज बनवाने और देश के अलग-अलग हिस्सों में उन्हें बसाने में मदद करने में शामिल था। ईडी के अधिकारियों ने बताया कि शुरुआती जांच से एक गहरे वित्तीय नेटवर्क का पता चला है।

इसमें कुछ चैरिटेबल ट्रस्ट और संस्थाएं शामिल हैं जिन्हें कथित तौर पर भारी विदेशी चंदा मिलता था। वह अवैध गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए इस पैसे को कई बैंक अकाउंट म्यूल अकाउंट और कई चरणों वाले ट्रांजैक्शन के जरिए इधर-उधर करते थे। अधिकारियों ने यह भी बताया कि जांच में संदिग्ध लोगों को नकद निकासी और छोटी रकम के ट्रांसफर के जरिए पैसे भेजने की बात भी सामने आई है। फिलहाल मामले में आगे की जांच जारी है।

भाजपा सरकार ने देवभूमि उत्तराखंड को पेपर लीक का केंद्र बना दिया : राहुल

» नेता प्रतिपक्ष लोस ने कहा- यूके एसएससी परीक्षाओं में पद बेचे जा रहे हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। राहुल गांधी ने भाजपा सरकार पर देवभूमि उत्तराखंड को पेपर लीक का केंद्र बनाने का गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि यह युवाओं के भविष्य और रोजगार की चोरी है। उन्होंने दावा किया कि यूके एसएससी परीक्षाओं में पद बेचे जा रहे हैं और सरकार का नकल-विरोधी कानून केवल कागजों तक ही सीमित रहा। गांधी ने 17 जुलाई को देहरादून में युवाओं से इस लड़ाई में एकजुट होने का आह्वान किया है।

शुक्रवार को देहरादून में छात्रों के साथ बातचीत से पहले, कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को आरोप लगाया कि उत्तराखंड पेपर लीक का केंद्र बन गया है और उन्होंने युवाओं के भविष्य को नीलाम न होने देने का संकल्प लिया। गांधी ने कहा कि वह 17 जुलाई को देहरादून का दौरा कर रहे हैं क्योंकि देवभूमि को पेपर लीक का केंद्र बना दिया गया है। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने आरोप लगाया कि यूके एसएससी (उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग)

की परीक्षाओं को लेकर यहां एक सिस्टम बन गया है, जिसमें पटवारी या लेखपाल जैसे पद मेरिट के आधार पर नहीं, बल्कि अपराधियों द्वारा तय की गई कीमतों पर हासिल किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने नकल-रोधी कानून तो बनाया, लेकिन पेपर लीक होने का सिलसिला जारी रहा। गांधी ने कहा कि कानून सिर्फ़ कागज़ों तक ही सीमित रहा, जबकि परीक्षा के पेपर बाज़ार में बिकते रहे। ज़रा सोचिए एक छात्र सालों तक तैयारी करता है। वह फ़ॉर्म भरता है, फ़ीस देता है और दूर स्थित परीक्षा केंद्र तक जाता है। फिर भी, उस छात्र के लिए बनी जगह कोई और खरीद लेता है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यह सिर्फ़ पेपर लीक नहीं, बल्कि चोरी है।

पिछली सरकारों की बेहतरीन नीतियों को अपना रहे हैं तेलंगाना सीएम : रेवंत रेड्डी

» राज्य में ज्यादा निवेश लाने की योजना पर कांग्रेस सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हैदराबाद। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने कहा कि उनकी सरकार राज्य में ज्यादा निवेश लाने के लिए पिछली सरकारों की बेहतरीन नीतियों को आगे बढ़ा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार चंद्रबाबू नायडू (1994-2004) और वाई.एस. राजशेखर रेड्डी (2004-2014) की पिछली सरकारों के साथ-साथ 2014 से दिसंबर 2023 तक रही बीआरएस सरकार की नीतियों को भी आगे बढ़ा रही है।

वह महबूबनगर जिले के दिविटिपल्ली में अमारा राजा गीगा कॉरिडोर में अमारा राजा की ईवी सेल मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सरकार पिछली सरकारों की बेहतरीन नीतियों और तौर-तरीकों को अपना रही है, क्योंकि वह पॉलिसी पैरालिसिस की स्थिति से बचना चाहती है। उनकी सरकार ने तेलंगाना राइजिंग -47 पहल के तहत मुख्य रूप से उद्योग, पर्यटन और स्वास्थ्य क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए कई नीतियां शुरू की हैं।

बुनियादी ढांचे में हो रहा सुधार

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार राज्य में अधिक निवेश आकर्षित करने के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार कर रही है। उद्योग स्थापित करने के लिए बुनियादी ढांचा बहुत जरूरी है, इसलिए सरकार पारदर्शी नीतियां बनाकर आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री ने बताया कि तेलंगाना राष्ट्रीय जीडीपी में 5 प्रतिशत का योगदान दे रहा है, जो संतोषजनक नहीं है। उनका लक्ष्य राष्ट्रीय जीडीपी में तेलंगाना की हिस्सेदारी को बढ़ाकर 10 प्रतिशत करना और 2034 तक तेलंगाना को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था तथा 2047 तक तीन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाना है। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि वे जल्द ही महबूबनगर जिले के लोगों के साथ अच्छी खबर साझा करेंगे।

ईवी सेक्टर में चीन के साथ प्रतिस्पर्धा गौरव की बात

उन्होंने कहा कि पालमुरु-रंगारेड्डी लिफ्ट सिंचाई योजना के लिए 90 टीएमसी पानी और डिंडी परियोजना के लिए 30 टीएमसी पानी के आवंटन को लेकर बातचीत पहले से ही चल रही है। मुख्यमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि जिन किसानों ने अमारा राजा कंपनी को अपनी जमीन दी है, उन्हें नई ईवी सेल मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में नौकरी दी जानी चाहिए। मुख्यमंत्री ने चीन, जापान, जर्मनी और कोरिया से प्रेरणा लेने के लिए अमारा राजा की तारीफ की। उन्होंने कहा कि ईवी सेक्टर में चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करना अमारा राजा के लिए गर्व की बात है। उन्होंने बताया कि यूनिट में 700 कर्मचारी काम करते हैं, जिनमें से 400 महिलाएं हैं। यह महिला सशक्तीकरण का एक उदाहरण है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अल नीनो के असर से बारिश कम हो रही है, जिससे किसानों को परेशानी हो रही है। कोविड-19 महामारी के बाद से जलवायु में काफी बदलाव आए हैं। प्रदूषण कम करने की जरूरत है और प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहन बहुत जरूरी हैं।

सावधान मौसम का डबल डोज, गर्मी उमस का यलो अलर्ट

» आज गर्मी-उमस का येलो अलर्ट, 18-19 को तेज बारिश के आसार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली समेत पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में मौसम का लगातार बदलता मिजाज लोगों की परेशानी का कारण बना हुआ है। एक ओर मानसून सक्रिय होने के बावजूद अपेक्षित बारिश नहीं हो रही, वहीं दूसरी ओर तेज धूप, उमस और गर्म हवाओं ने लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के ताजा पूर्वानुमान के अनुसार 16 जुलाई को दोपहर के समय तेज गर्मी और उमस को लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने लोगों को दोपहर के समय अनावश्यक रूप से बाहर निकलने से बचने और पर्याप्त मात्रा में पानी पीने की सलाह दी है। आईएमडी के पूर्वानुमान के अनुसार 16 जुलाई को अधिकतम तापमान 38 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 28 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। आकाश आंशिक रूप से बादलों से ढका रहेगा। मौसम विभाग ने विशेष रूप से दोपहर के समय हॉट एंड ह्यूमिड यानी अत्यधिक गर्म और उमस भरे मौसम की चेतावनी जारी की है। 17 जुलाई को भी मौसम में कोई खास राहत मिलने के संकेत नहीं हैं। इस दिन अधिकतम तापमान 39 डिग्री और न्यूनतम 28 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। आसमान आंशिक रूप से बादलों से ढका रहेगा तथा हालांकि इस दिन किसी प्रकार की मौसम संबंधी चेतावनी जारी नहीं की गई है। मौसम विभाग के अनुसार 18 जुलाई से मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। इस दिन अधिकतम तापमान 36 डिग्री और न्यूनतम 28 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। गरज-चमक के साथ बारिश होने की संभावना जताई गई है। 19 जुलाई को भी गरज-चमक के साथ बारिश जारी रहने की संभावना है। इस दिन अधिकतम तापमान 36 डिग्री और न्यूनतम 27 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है, मौसम विभाग ने इन दोनों दिनों में तेज बारिश और आंधी की आशंका व्यक्त की है। इसके बाद 20 जुलाई को अधिकतम तापमान 36 डिग्री और न्यूनतम 26 डिग्री रहने की संभावना है।

महाराष्ट्र में फिर सियासी माहौल गरमाया

महायुति पर महाविकास अघाड़ि का जोरदार हमला

- कॉकरोच पार्टी के विरोध प्रदर्शन के समर्थन में शवसेना यूबीटी
- कांग्रेस ने पेपर लीक पर भाजपा सरकार को घेरा
- माझी लड़की बहिन योजना से 90 लाख महिलाओं को हटाने पर सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में फिर रजनीति नए-नए रंग में आ गई है। अबकी बार शिवसेना (यूबीटी) ने माझी लड़की बहिन योजना को लेकर जहां भाजपा सरकार को घेरा है उद्धव ठाकरे ने राहुल गांधी से दिल्ली के जंतर-मंतर पर कॉकरोच पार्टी के विरोध प्रदर्शन में शामिल होने की अपील की है।

सांसद अरविंद सावंत ने महाराष्ट्र सरकार की माझी लड़की बहिन योजना से 90 लाख महिलाओं को हटाने को संविधान का घोर उल्लंघन बताया है। उन्होंने आरोप लगाया कि जिन लाभार्थियों को हटाया गया उन्होंने सत्ताधारी गठबंधन का समर्थन किया था, जिससे यह कदम राजनीतिक प्रतिशोध का मामला बन जाता है। यह घटना सरकारी फंड के प्रबंधन और जनहित पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाती है। उधर पेपर लीक मामले में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की जा रही है। ठाकरे ने खुद भी 20 जुलाई को इस आंदोलन का समर्थन करने की घोषणा की है, जबकि कांग्रेस अभी भी सार्वजनिक समर्थन घोषित करने से हिचक रही है, जिससे विपक्ष में एकजुटता पर सवाल उठ रहे हैं।

कई विपक्षी नेता कॉकरोच जनता पार्टी के पक्ष में

कई विपक्षी नेताओं ने कॉकरोच जनता पार्टी नाम के व्यंग्यात्मक विरोध समूह का समर्थन किया है - यह नाम भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की एक टिप्पणी के बाद रखा गया था और उनके आंदोलन के प्रति अपना समर्थन जताया है। आम आदमी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस, सीपीआई और अन्य दलों के नेताओं ने या तो एकजुटता दिखाई है या जंतर-मंतर पर विरोध स्थल का दौरा किया है। आप के सांसद संजय सिंह और दिल्ली की पूर्व सीएम आतिशी, टीएमसी की महुआ मोइत्रा और कीर्ति आजाद, सीपीआईएम वृंदा कराट और केरल की नेता शैलजा उन कई नामों में शामिल हैं जिन्होंने इस ऑनलाइन समूह का समर्थन किया है।

सोनम वांगचुक के प्रति समर्थन में आए पूर्व सीएम

शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने सोमवार को कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी से दिल्ली के जंतर-मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के चल रहे विरोध प्रदर्शन में शामिल होने और अपना समर्थन देने की अपील की। ठाकरे ने इस संगठन और पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक के प्रति अपना समर्थन जताया और विरोध प्रदर्शन के लिए और अधिक समर्थन की मांग की। मुंबई में एक प्रमुख ने कहा कि वह विरोध प्रदर्शन वाली जगह पर जाएंगे और उन्होंने राहुल गांधी से भी वहां जाने की अपील की। समाचारपत्र ठाकरे ने कहा कि मैं भी जाऊंगा। राहुल गांधी जी को भी जाना चाहिए। जिन लोगों को देश के युवाओं पर भरोसा है, उन्हें भी जाना चाहिए। पूरे देश के लोगों को सड़कों पर उतरकर उनका समर्थन करना चाहिए। ठाकरे 20 जुलाई को दिल्ली जाकर जंतर-मंतर का दौरा करेंगे और चल रहे विरोध प्रदर्शन में शामिल होंगे। क्लाइमेट एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक के साथ मिलकर कॉकरोच जनता पार्टी ने 20 जून को जंतर-मंतर पर अनिश्चितकालीन धरने का आह्वान किया है। बोस्टन से लौटे अभिजीत दिपके के नेतृत्व वाले इस संगठन ने नीट पेपर लीक जैसी परीक्षाओं में कई गड़बड़ियों के कारण केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की है।

जिम्मेदार लोगों पर कोई कार्रवाई की जाए

राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि पेपर लीक के लिए जिम्मेदार लोगों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई, जबकि परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्र और उम्मीदवार इस गड़बड़ी की वजह से परेशान हो रहे हैं। उन्होंने लिखा कि ये देश के मौजूदा और भविष्य के शिक्षक हैं, जिनके हाथों में भारत का भविष्य है। ये वही लोग हैं जिन्होंने साल-दर-साल तैयारी की, फॉर्म भरे, फीस दी और दूर-दराज के सेंटर्स तक का सफर किया। और अब वे बस इंतजार कर रहे हैं - बिना किसी तारीख के, बिना किसी जवाब के।

संविधान का गंभीर उल्लंघन कर रही फणनवीस सरकार

उन्होंने कहा कि यह संविधान का गंभीर उल्लंघन है, और इसीलिए मैं इस सरकार के कामों पर गंभीर सवाल उठाना चाहता हूँ। हालाँकि विधानसभा का सत्र खत्म हो चुका है, फिर भी रिपोर्ट कई मुद्दों की ओर इशारा करती है। कर्ज का बोझ बहुत ज्यादा है, यह राज्य के राजस्व के 10 प्रतिशत से भी ज्यादा होने वाला है। उन्होंने हमारी राज्य सरकार के लिए ऐसी ही गंभीर स्थिति पैदा कर दी है। महिला एवं

बाल विकास विभाग और महाराष्ट्र सरकार द्वारा शुरू की गई माझी लड़की बहिन योजना राज्य भर की पात्र महिलाओं को आर्थिक सहायता देती है। इस योजना के तहत, 21 से 65 वर्ष की आयु की महिलाओं को सीधे उनके खाते में 1,500 रुपये दिए जाते हैं। इसका मकसद महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण में सुधार करना और परिवारों में निर्णय लेने की उनकी भूमिका को बढ़ाना है।

राहुल गांधी का महाराष्ट्र सरकार पर हमला

लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने मंगलवार को महाराष्ट्र सरकार की आलोचना की। उन्होंने पेपर लीक होने के आरोप के बाद टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट - 26 रद्द किए जाने पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि परीक्षा रद्द होने के दो हफ्ते बाद भी कोई नई तारीख घोषित नहीं की गई है, जिससे लगभग छह लाख उम्मीदवार अधर में लटके हुए हैं। एक पोस्ट में विपक्ष के नेता ने लिखा कि महाराष्ट्र टीइटीका पेपर लीक हुआ, परीक्षा रद्द कर दी गई। 6 लाख उम्मीदवार अधर में लटके हैं। दो हफ्ते बीत चुके हैं, नई तारीख का कोई अता-पता नहीं है। उन्होंने कहा कि पेपर लीक करने वाले आजाद घूम रहे हैं, सिस्टम पर कोई दाग नहीं लगा है, और सजा उसे भुगतनी पड़ रही है जिसने ईमानदारी से मेहनत की थी।

महाराष्ट्र के सीएम से कांग्रेस नेता ने तीन सूत्रीय मांग रखी

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से बात करते हुए, राहुल गांधी ने तीन सूत्रीय मांग रखी, जिसमें उनकी अपील का मुख्य बिंदु महाराष्ट्र टीईटी का नया शेड्यूल तुरंत घोषित करना था। उन्होंने राज्य सरकार से आग्रह किया कि बिना और देरी किए परीक्षा की नई तारीख घोषित की जाए, उम्मीदवारों को सजा देने के बजाय पेपर लीक के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए, और उन उम्मीदवारों को उम्र सीमा में छूट दी जाए जिनकी पात्रता परीक्षा टलने से प्रभावित हुई हो सकती है। उन्होंने लिखा कि मुख्यमंत्री जी, आज ही तीन बातें- समय-सीमा- टीईटी की नई तारीख अभी घोषित करें। लीक के लिए जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई हो, उम्मीदवारों पर नहीं, जिनका साल इस लीक की वजह से बर्बाद हुआ, उन्हें उम्र सीमा में छूट मिलनी चाहिए। राहुल ने कहा कि परीक्षा रद्द होने के बाद अनिश्चितता में जी रहे लाखों उम्मीदवारों का भरोसा बहाल करने के लिए सरकार को तेजी से कदम उठाने चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि प्रशासनिक विफलता का बोझ उन लोगों पर नहीं पड़ना चाहिए जिन्होंने सालों तक ईमानदारी से तैयारी की थी।

कांग्रेस जोर शोर से उठा रही मुद्दा

हालांकि, कांग्रेस ने अभी तक सार्वजनिक रूप से अपना समर्थन घोषित नहीं किया है, जबकि वह महीनों से इस मुद्दे को उठा रही है। अमरावती के लोकसभा सांसद बलवंत बसवंत वानखेड़े ने सीजेपी के विरोध प्रदर्शन में भाग लिया है, वहीं गांधी सहित अन्य नेताओं ने इंतजार करो और देखो का रवैया अपनाया है।

माझी लड़की बहिन योजना से 90 लाख नाम कटे : अरविंद सावंत

शिवसेना (यूबीटी के सांसद अरविंद सावंत ने महाराष्ट्र सरकार की आलोचना की। उन्होंने माझी लड़की बहिन योजना से 90 लाख लाभार्थियों को कथित तौर पर हटाने के कदम को संविधान का घोर उल्लंघन बताया और सरकारी फंड के मैनेजमेंट पर सवाल उठाए। पत्रकारों से बात करते हुए सावंत ने कहा कि जिन महिलाओं के नाम इस स्कीम से हटाए गए, उनमें से कई ने हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों में सत्ताधारी गठबंधन का समर्थन किया था।

सावंत ने कहा कि इस स्कीम से लाखों महिलाओं के नाम हटा दिए गए। ये वही महिलाएं थीं जो इस लालच में आकर मौजूदा सरकार को सत्ता में ले आईं; और सिर्फ महिलाओं ने ही वोट नहीं दिया, बल्कि उनके परिवारों ने भी वोट दिया। अब सरकार क्या करने जा रही है? उन्होंने नाम हटा दिए हैं। नतीजा हमें भुगतना पड़ रहा है। यह जनता का पैसा है। सावंत ने आगे कहा कि यह हटाना संवैधानिक नियमों का उल्लंघन है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

सुप्रीम कोर्ट का फैसले से मिलेगा न्याय

कभी-कभी सरकारें व सरकारी विभाग अपने कर्मचारियों से ऐसी ज्यादती कर देते हैं कि उनकों इंसाफ के लिए अदालत की चौखट पर जाना पड़ता है। दरअसल सुप्रीम कोर्ट ने ड्यूटी के दौरान दृष्टिहीन हुए पूर्व सीआरपीएफ कांस्टेबल को 1.25 करोड़ रुपये मुआवजा देने का आदेश दिया। शीर्ष अदालत विभाग को फटकार भी लगाई है। अदालत ने कहा कि सीआरपीएफ को उन्हें नौकरी से हटाने के बजाय वैकल्पिक पद देना चाहिए था। यह फैसला मानवीय हित में बहुत सरहनीय है। अब उम्मीद की जानी चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से ओ सभी को न्याय मिलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की आलोचना की। बल ने सेवा के दौरान दृष्टिहीनता के शिकार हुए एक ड्राइवर को वैकल्पिक पद पर समायोजित करने के बजाय चिकित्सकीय रूप से अयोग्य घोषित कर दिया था। न्यायालय ने कहा कि बल एक आदर्श नियोक्ता के रूप में अपने कर्तव्य में विफल रहा। न्यायालय ने पूर्व कांस्टेबल को 1.25 करोड़ रुपये का मुआवजा दिया।

यह राशि बकाया वेतन, ब्याज और लागत के लिए है। न्यायालय ने हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट के बहाली के निर्देश को संशोधित किया, क्योंकि कांस्टेबल पहले ही सेवानिवृत्ति की आयु पार कर चुके हैं। न्यायमूर्ति दीपंकर दत्ता और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने केंद्र सरकार की अपील खारिज कर दी। यह अपील हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट के एक फैसले के खिलाफ थी। हाई कोर्ट ने कहा था कि सीआरपीएफ ने दिव्यांगजन (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 की धारा 47 का उल्लंघन किया। सीआरपीएफ ने प्रतिवादी को सेवा में बनाए रखने के बजाय चिकित्सकीय रूप से अयोग्य घोषित कर दिया था। न्यायालय ने पाया कि सीआरपीएफ उसे वैकल्पिक पद देने में विफल रहा। यह सरकारी प्रतिष्ठानों पर धारा 47 के तहत एक कर्तव्य है। न्यायालय ने कहा कि दिव्यांगजन अधिनियम की धारा 47 अनिवार्य प्रकृति की है। यह उचित समायोजन के अधिकार को दिखाती है। न्यायालय ने साफ किया कि अगर सेवा के दौरान शारीरिक दिव्यांगता आती है, तो व्यक्ति को समान वेतन और सेवा लाभ वाले किसी अन्य पद पर स्थानांतरित किया जाना चाहिए। अगर यह संभव नहीं है, तो नियोक्ता को उसे किसी अन्य पद पर समायोजित करना होगा। इसके लिए एक सुपरन्यूमेरी पद भी बनाया जा सकता है। पीठ ने सीआरपीएफ द्वारा संदर्भित 2002 की अधिसूचना का भी जिक्र किया।

“ अदालत ने कहा कि सीआरपीएफ को उन्हें नौकरी से हटाने के बजाय वैकल्पिक पद देना चाहिए था। यह फैसला मानवीय हित में बहुत सरहनीय है। अब उम्मीद की जानी चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट के इस फै सले से ओ सभी को न्याय मिलेगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

परेशान करती सरकार व समाज की चुप्पी

विश्वनाथ सचदेव

देश की राजधानी दिल्ली में 'कॉकरोच पार्टी' का आंदोलन जारी है। लगभग एक महीना होने को आया देश के युवाओं की टोलियों को देश के शिक्षामंत्री का इस्तीफा मांगते हुए। उनका कहना है 'नीट' की परीक्षा में होने वाली धांधली और अनेक युवाओं द्वारा की गई आत्महत्याओं की जिम्मेदारी किसी को तो लेनी होगी। सवाल शिक्षामंत्री के इस्तीफे मात्र का नहीं है, सवाल जंतर-मंतर पर प्रदर्शन की आपराधिक अनदेखी करने का भी है। इस बीच लद्दाख के जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षा सुधारक सोनम वांगचुक को भी जंतर-मंतर पर आमरण अनशन करते हुए सोलह दिन से अधिक हो गये हैं। और जब मैं यह शब्द लिख रहा हूं, सोशल मीडिया पर यह समाचार वायरल हो रहा है कि वांगचुक की स्थिति ठीक नहीं है।

हैरानी की बात तो यह है कि युवाओं के आंदोलन के इतने दिन बीत गये, वांगचुक का स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता जा रहा है, और सरकार के कानों पर जूं भी नहीं रेंग रही! क्या यह सही नहीं है कि 'नीट' की परीक्षा में हुई धांधली के चलते पंद्रह से अधिक युवाओं ने आत्महत्या कर ली? इस धांधली और युवाओं की मौतों के लिए कौन जिम्मेदार है, इसका कोई समुचित जवाब सरकार ने अब तक नहीं दिया है। यह सही है कि इस बीच 'नीट' की परीक्षा फिर से करवा ली गयी है, पर क्या यह सही नहीं है कि लाखों विद्यार्थियों ने भयंकर मानसिक दबाव में यह परीक्षा फिर से दी है? कोई तो उत्तरदायी होगा इस सारी स्थिति के लिए। मामला शिक्षा में धांधली का है, तो क्यों न शिक्षामंत्री को इसके लिए उत्तरदायी माना जाये? होना तो यह चाहिए था कि देश के शिक्षामंत्री स्वयं आगे बढ़कर नैतिकता के आधार पर इस्तीफा देकर एक उदाहरण प्रस्तुत करते। पर उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया। उलटे भाजपा वाले बड़े गर्व से यह कहते नहीं थक रहे कि उनकी सरकार में पद से इस्तीफा देने की परम्परा नहीं है। सवाल पूछा जाना चाहिए कि संबंधित मंत्री जवाबदेही क्यों न स्वीकारें। छोटी-छोटी बातों पर प्रतिक्रिया देने वाले प्रधानमंत्री कार्यालय से भी इस महत्वपूर्ण प्रकरण के बारे में कोई बयान नहीं दिया गया है।

'नीट' के लगभग बीस उम्मीदवारों की आत्महत्या क्या कोई इतना छोटा मामला है कि देश के प्रधानमंत्री को इस बारे में कुछ कहने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई? यहां यह कहना असंगत नहीं होगा कि 2021 से लेकर 2026 तक 'नीट' से जुड़े ऐसे नब्बे से

अधिक मामले सामने आये हैं। इस बार लगभग 23 लाख छात्रों ने मेडिकल प्रवेश परीक्षा दी थी। सब जानते हैं कि इस परीक्षा की तैयारी कोई खेल नहीं होती। भयंकर दबाव में रहते हैं प्रतीक्षार्थी। आत्महत्या करने वाले अभागे छात्र इस दबाव को झेल नहीं पाये। कल्पना की जा सकती है कि इनके अभिभावकों पर क्या गुजर रही होगी। क्या उनकी पीड़ा सरकार के वरिष्ठ नेताओं से सांत्वना के दो शब्द पाने लायक भी नहीं थी? यह सही है कि देश के मुख्य न्यायाधीश द्वारा युवाओं की तुलना कॉकरोच से किये जाने के बाद कॉकरोच पार्टी के गठन को पहले हल्के में ही लिया गया था। बोस्टन में पढ़ाई कर रहे एक भारतीय युवा अभिजीत दीपके ने शायद मजाक में ही मुख्य न्यायाधीश की बात पर सोशल मीडिया से यह सवाल उछाला था कि 'यदि सारे कॉकरोच इकट्ठे हो गये तो?' इस 'तो' के उत्तर में जब हजारों की संख्या में युवा समर्थकों ने मुख्य न्यायाधीश के कथन की आलोचना करते हुए विरोध की आवाज उठायी तो बात गंभीर होती गयी। यह सही है कि आज भी संस्था की दृष्टि से इस आंदोलन को उतनी सफलता नहीं मिल पायी, जितनी मिल जानी चाहिए थी, पर जो समर्थन इसे देश में मिल रहा है, वह कम भी नहीं है। कम से कम इतना कम तो नहीं कि इसकी उपेक्षा की जाये। आखिर युवा यही तो पूछ रहे हैं कि परीक्षा में धांधली का जिम्मेदार कौन है? छात्रों की आत्महत्या करने के लिए बाध्य करने के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं हो रही है? वांगचुंक और उनके साथ कई छात्रों को अनशन पर क्यों बैठना पड़ा है? सबसे बड़ा सवाल यह है कि हमारी समूची व्यवस्था इतनी असंवेदनशील और अनुत्तरदायी कैसे हो गयी है? एक और सवाल जो हमारी चिंता का विषय बनना चाहिए वह हमारे मीडिया की असंवेदनशीलता का है।

जंतर-मंतर पर हजारों युवा देश के शिक्षामंत्री के खिलाफ लगभग एक माह से प्रदर्शन कर रहे हैं। खुले मैदान में ये छात्र गर्मी और बरसात झेल रहे हैं। भूख हड़ताल पर बैठे युवाओं में से कइयों को बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण अस्पतालों में भर्ती किया गया है। मुद्दा देश के युवाओं के भविष्य का है। लगातार प्रदर्शन हो रहे हैं। पर इस सबको लेकर देश की मुख्यधारा का मीडिया जरा भी चिंतित नहीं दिखाई दे रहा। आपराधिक चुप्पी सरकार ही नहीं बरत रही, हमारे मीडिया ने भी वैसी ही चुप्पी साध रखी है। आखिर क्यों?

बदलाव के दौर में नई शुरुआत की जरूरत

गुरबचन जगत

हर सुबह मैं हमारे राष्ट्रीय अखबारों की मुख्य खबरों के शीर्षक पंक्तियां देखता, मोबाइल फोन पर खबरें स्क्रॉल करता हूं, यहां तक कि टीवी पर भी नजर डालता हूं... यह सब किसी अच्छी खबर की तलाश में, लेकिन कोई फायदा नहीं होता। एआई के दौर की शुरुआत के साथ दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है। अमेरिका, चीन, ताइवान, कोरिया इत्यादि देशों की कंपनियां, संस्थान और लोग नई और रोमांचक तकनीकें, जैसे कि क्वांटम कंप्यूटिंग, रोबोटिक्स, क्लीन एनर्जी और एआई की सोचने-समझने और चेतना विकसित करने की क्षमता करने के बारे में बात कर रहे हैं। मस्क और उनकी कंपनी मंगल ग्रह तक पहुंचने, अंतरिक्ष यात्रा और अंतरिक्ष कक्षा में डेटा सेंटर स्थापित करने की बात कर रहे हैं... जब मैं यह लेख लिख रहा हूं, तब भी इंसानी क्षमता और कल्पना को नई उड़ान मिल रही है।

लेकिन, यहां अपने देश में हम क्या देखते हैं, राष्ट्रीय विचार किस बारे में हैं? राजनीतिक और धार्मिक झगड़ों की खबरें, राजनीति में दखलअंदाजी करते विभिन्न धार्मिक संस्थाओं द्वारा जारी फतवों की खबरें। अनेक धार्मिक स्थलों पर हुई चंदा या चढ़ावे की चोरी की जांच की खबरें। यह महत्वपूर्ण पूजा-स्थलों को लेकर हैं। फिर स्थानीय धर्मगुरुओं द्वारा चलाए जा रहे हजारों 'डेरे' हैं, और यहां भी मामला भारी-भरकम दान-चढ़ावे का है। धीरे-धीरे राजनीति और धर्म के बीच की रेखा मिटती गई और आज वे गलबहियां डाले चल रहे हैं। इस अफरातफरी में अगर कोई बंदा तर्क, कोई तथ्य, कोई दिशा तलाशना चाहे... कुछ ऐसा जो राष्ट्रीय हित को आगे बढ़ाने वाला हो। कोई स्पष्ट राजनीतिक या आर्थिक विचारों को ढूंढ़ता है- चाहे वे दक्षिणपंथी हो, मध्यमार्गी हो, वामपंथी, समाजवादी या कम्युनिस्ट हो; लेकिन सब बेकार, हर चीज पर बस धर्म के अलग-अलग रंग छाए हुए हैं। अखबार पढ़ने की सुबह की दिनचर्या के वक्त टी.एस. एलियट की मशहूर कविता 'वेस्टलैंड' की यह पंक्तियां बेसाख्ता याद आ जाती हैं—'यहां पानी नहीं, बस चट्टान है; चट्टान है, पानी नदारद और रेतीली सड़क...।'

आम आदमी कहां है, जिसके नाम पर यह सब किया जाता है? वह तो 'बलि का बकरा' है, लेकिन 'बलि का बकरा' असल में क्या चाहता है? क्या वह इन अंधेरी गलियों में चलना ही चाहता है- नहीं, उसे रोजगार चाहिए, उसे अपने परिवार के लिए दो वक्त की रोटी चाहिए, उसे मौसम की मार से बचने के लिए सिर पर छत चाहिए, उसे अपने बच्चों के लिए शिक्षा स्वास्थ्य सुविधाएं चाहिए, वह चाहता है कि जान-माल की सुरक्षा की गारंटी। नब्बे के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलने पर छिपी हुई क्षमताओं को बाहर आने में मदद मिली और हमने इसे अपने आईटी सेक्टर के विकास में देखा। उस समय आईआईटी, आईआईएम और क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों ने शिक्षा का जो स्तर तैयार किया, उसी से यह विकास संभव हो पाया। सरकारी प्रोत्साहन के साथ व्यक्तिगत प्रयासों ने इसे आसान बनाया और समय के साथ भारत आईटी सेवा प्रदाता क्षेत्र में एक शक्तिपुंज बन गया। इस पारिस्थितिकी ने बड़ी संख्या में हुनर तैयार किया, जिससे न केवल टीसीएस, इंफोसिस, विप्रो, एचसीएल जैसी कई आईटी कंपनियां विकसित हुईं, बल्कि भारत ने अपने हुनर को दुनियाभर में निर्यात भी किया।

आज भी तकनीक की दुनिया में कई बड़े नाम भारतीय मूल के लोगों के हैं, जिन्होंने अपने व्यावयासिक जीवन की शुरुआत हमारे आईआईटी और क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों से की थी। सत्य नडेला, सुंदर पिचाई, शांतनु नारायण आदि इसके बेहतरीन उदाहरण हैं। आज जब इस क्षेत्र पर खतरा मंडरा रहा है, तो इसकी जगह कौन लेगा? एआई के कारण हो रहे बदलावों से हजारों नौकरियां जा रही हैं या उन पर खतरा मंडरा रहा है। 90 के दशक में हम मुश्किल हालात से उबरकर आगे बढ़े थे, लेकिन क्या खुद को फिर से खोजने के लिए हमें दोबारा उसी मुश्किल दौर में पहुंचना होगा...? हमारे पास कोई ऐसा तरीका या 'संहिता' है जिसे हम बांच सकें, वह जिसने पिछली बार सफलता दिलाई थी। इसमें नैसकॉम, एसटीपीआई, एसईजेड जैसी संस्थाओं का गठन और उनसे जुड़ी टैक्स छूट और बुनियादी ढांचा, और निश्चित रूप से उस दौर के सभी उदारीकरण सुधार शामिल हैं। आईटी उद्योग को बढ़ावा दिया गया; इसे कई तरह की छूटें दी गईं और सरकार ने ज्यादातर मामलों में मददगार की भूमिका निभाई और जटिल 'लाल फीताशाही' को राह से दूर रखा। आईटी ने देश के लोगों का ध्यान खींचा और आम नागरिक ने इसे गरीबी और कम आय वाले दायरे से बाहर निकलने का एक जरिया माना।

संक्षेप में कहें तो, इसने हमारे पढ़े-लिखे और कानून का पालन करने वाले नागरिकों को अवसर और सम्मान दिया, और देश को एक बड़े वैश्विक सेवा प्रदाता के रूप में आगे बढ़ाया। आज हमारी अर्थव्यवस्था 90 के दशक की तुलना में कई गुणा बड़ी है, लेकिन इस बड़े पैमाने और उन्नति के साथ एक उलटी स्थिति भी जुड़ी है- मंदी कहीं ज्यादा नुकसानदेह हो सकती है। जिन लोगों ने जीवनस्तर का एक खास पायदान हासिल कर लिया है और जिन्होंने आईटी के सपने में निवेश किया है, आज उनके पास खोने के लिए बहुत कुछ है। न केवल सीधे तौर पर नौकरी करने वाले लोग, बल्कि देश में आईटी हब के इर्द-गिर्द बनी संपूर्ण अर्थव्यवस्थाएं भी प्रभावित हो सकती हैं। तो, इसका विकल्प क्या है? हमें फिर से अपनी एक खासियत ढूंढ़नी होगी और सरकार को एक बार फिर नियामक के बजाय मददगार की भूमिका निभानी होगी।

स्किन को गर्मियों में हेल्दी व ग्लोइंग रखने के लिए करें ये काम

गर्मियों के मौसम में हमारी त्वचा को सबसे ज्यादा नुकसान झेलना पड़ता है। तेज धूप, पसीना, धूल और प्रदूषण त्वचा को ऑयली, डल और बेजान बना देते हैं। कई लोगों को इस मौसम में पिंपल्स, टैनिंग और स्किन इरिटेशन जैसी समस्याएं भी होने लगती हैं। ऐसे में जरूरी है कि आप अपनी त्वचा के लिए एक सही और नियमित स्किन केयर रूटीन अपनाएं। इसके लिए आपको महंगे प्रोडक्ट्स या पार्लर जाने की जरूरत नहीं है। कुछ आसान स्टेप्स को घर पर फॉलो करके आप अपनी त्वचा को हेल्दी और ग्लोइंग बना सकते हैं। एक सही स्किन केयर रूटीन न सिर्फ आपकी त्वचा को साफ रखता है, बल्कि उसे सूरज की हानिकारक किरणों से भी बचाता है। साथ ही यह आपकी स्किन को हाइड्रेटेड और फ्रेश बनाए रखता है। अगर इन आसान स्टेप्स को अपनी रोजमर्रा की आदत में शामिल करते हैं, तो आपकी त्वचा हमेशा हेल्दी, फ्रेश और ग्लोइंग बनी रहेगी।

क्लींजिंग

हमें अच्छी और ग्लोइंग त्वचा पाने के लिए कम से कम दिन में 2 बार चेहरे को माइल्ड फेस वॉश से साफ करें। ऑयली स्किन के लिए जेल-बेस्ड क्लींजर बेहतर होता है। जो त्वचा की देखभाल (स्किनकेयर) का सबसे पहला और महत्वपूर्ण चरण है, जिसका मुख्य उद्देश्य चेहरे से धूल-मिट्टी, अतिरिक्त तेल, प्रदूषण और मेकअप को हटाना है। यह त्वचा के रोमछिद्रों को बंद होने से रोकता है, जिससे पिंपल्स और ब्लैकहेड्स जैसी समस्याएं नहीं होतीं। यह फेशियल का पहला स्टेप है स्किन को डीप क्लिंज करना। इसके लिए आपको चारकोल जैसे इंग्रेडिएंट्स पोर्स को आसानी से साफ करते हैं। इसके अलावा मुल्तानी मिट्टी फेस क्लींजर भी स्किन के लिए अच्छा होता है। ये क्लींजर त्वचा में मौजूद तेल और गंदगी को साफ करके स्किन को रेडियंट बनाते हैं।

सनस्क्रीन

धूप में ज्यादा देर रहने से स्किन पर टैनिंग, पिगमेंटेशन, झुर्रियां और समय से पहले बुढ़ापा आने का खतरा बढ़ सकता है.इससे बचना है तो सनसक्रीन का इस्तेमाल जरूर करें। लेकिन अधिकतर मामलों में इसको खरीदते समय युवा गलती कर देते हैं। लोग सिर्फ एसपीएफ देखकर सनस्क्रीन खरीदते हैं, जबकि कुछ और चीजों पर ध्यान देना ज्यादा जरूरी है। इसलिए धूप में निकलने से पहले एसपीएफ 50+ सनस्क्रीन जरूर लगाएं। यह आपकी त्वचा को वी किरणों और टैनिंग से बचाता है। हर 2-3 घंटे में दोबारा लगाना न भूलें।

मॉइस्चराइजिंग

गर्मी में भी मॉइस्चराइज़र जरूरी होता है। लाइट और ऑयल-फ्री मॉइस्चराइज़र स्किन को हाइड्रेट रखता है, वो भी बिना चिपचिपाहट के। गर्मी में ऑयल-फ्री मॉश्चराइजर का उपयोग करना चाहिए।

टोनिंग

त्वचा को जवां बनाए रखने के लिए क्लिंजिंग और मॉइश्चराइजिंग के साथ ही टोनिंग भी बेहद जरूरी होती है। लेकिन बहुत सी महिलाएं टोनिंग को स्किप कर देती है। जिससे आपकी त्वचा काफी खराब होने लगती है। टोनिंग त्वचा में कसाव लाता है। यह स्किन को फ्रेश और बैलेंस्ड बनाए रखता है। रोज चेहरा धोने के बाद टोनर लगाना जरूरी है। त्वचा पर टोनर का उपयोग आपकी त्वचा के अंदरूनी हिस्सों में आने वाली सूजन को रोकने में सहायक होता है। इससे त्वचा में सूजन नहीं लगती है। त्वचा पर नियमित रूप से टोनिंग करने से त्वचा के रोम छिद्र बढ़े और ढीले नहीं होते। इससे त्वचा में कसाव बना रहता है।

हंसना मना है

पप्पू अपनी पत्नी से: अच्छा ये बताओ 'बिदाई' के समय तुम लड़कियां इतनी रोती क्यों हो? पत्नी: 'पागल' अगर तुझे पता चले.. अपने घर से दूर ले जाकर कोई तुमसे 'बर्तन मंजवाएगा' तो तू क्या नाचेगा।

सन: मॉम, पापा बहुत शरीफ है, मॉम: वो कैसे बेटा, सन: पापा जब भी किसी लड़की को देखते है, तो अपनी एक आंख बंद कर लेते है।

आदित्य अपनी गर्लफ्रेंड के पिता से मिलने गया, लड़की का पिता: मैं नहीं चाहता कि मेरी बेटी, अपनी पूरी जिंदगी एक मूर्ख इंसान के साथ गुजारे। आदित्य: बस अंकल, इसीलिए तो मैं उसे यहां से ले जाने आया हूं। दे जूते.. दे चप्पल!

लड़की- मैं तुम्हारे लिए आग पर भी चल सकती हूं, नदी में कूद सकती हूं। लड़का- लव यू जानूं, क्या तुम मुझसे अभी मिलने आ सकती हो, लड़की- पागल हो क्या इतनी धूप में कैसे आ सकती हूं...

फेंकू- पप्पू, जल्दी से टीवी चालू कर, 30 फीट का सांप दिखा रहे हैं, पप्पू- अरे फेंकू, नहीं देख सकते हम, फेंकू- क्यों? पप्पू- क्योंकि हमारा टीवी 21 इंच का है ना।

कहानी | हाथी और दर्जी

एक गांव रत्नापुर में रोज एक पुजारी पूजा-पाठ करता था। उस पुजारी के पास अपना एक हाथी था, जिसे वो अपने साथ रोज मंदिर लेकर जाता था। सभी गांव के लोग हाथी को बहुत पसंद करते थे। हाथी भी मंदिर में आने वाले सभी श्रद्धालुओं का खूब स्वागत-सत्कार किया करता था। रोज हाथी तालाब में नहाने के बाद घर लौटते समय दर्जी की दुकान पर रुकता था। दर्जी भी रोज हाथी को प्यार से एक केला खाने को देता। एक दिन हाथी जब दर्जी की दुकान पर केला खाने के लिए रुका, तो दर्जी को शरारत करने का दिल हुआ। उसने हाथी को केला देने के बाद अपने हाथ में सुई रख ली। जैसे ही हाथी ने उसे नमस्ते किया, दर्जी ने उसकी सूंड पर सुई चुभा दी। सुई चुभते ही हाथी जोर से चिंघाड़ते हुए करहाने लगा। दर्जी ने हाथी के दर्द का खूब मजाक उड़ाया और जोर-जोर से हंसने लगा। पुजारी को पता नहीं चला कि क्या हुआ। वो हाथी को सहलाते हुए अपने घर लेकर चला गया। अगले दिन फिर हाथी दर्जी की दुकान पर रुक गया। आज हाथी ने अपने सूंड में कीचड़ भर लिया था। दर्जी अपनी दुकान में बैठकर कपड़ों की सिलाई कर रहा था। जैसे ही हाथी ने दर्जी को देखा, वैसे ही हाथी ने उसकी पूरी दुकान पर कीचड़ फेंक दिया। उस कीचड़ में दर्जी तो भीगा ही, बल्कि उसकी दुकान के सीले हुए कपड़े भी खराब हो गए। इस सबसे दर्जी समझ गया कि मैंने कल जो किया था, उसी का दण्ड हाथी ने मुझे आज दिया है। दर्जी को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने हाथी से माफी मांगी। उसने कहा, हे गजराज, आपने बिल्कुल सही किया। मैंने जो कल किया था, उसका नतीजा यही होना चाहिए। हाथी ने दर्जी की तरफ देखा और अपनी सूंड को हवा में लहराते हुए वहां से चला गया। दर्जी को मन-ही-मन बहुत बुरा लग रहा था। उसने अपने एक अच्छा दोस्त हाथी खो दिया था। उस दिन से दर्जी ने ठान ली कि वो किसी को भी मजाक में भी नुकसान नहीं पहुंचाएगा।

7 अंतर खोजें

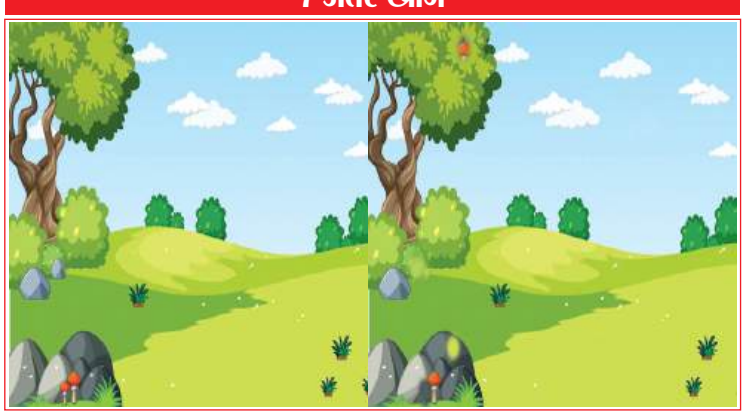

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। घर में मेहमानों का आगमन होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। व्यापार में लाभ होगा। निवेश शुभ रहेगा।

वृषभ किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। मनपसंद भोजन का आनंद मिलेगा। व्यापार में वृद्धि के योग हैं।

मिथुन व्ययवृद्धि से तनाव रहेगा। बजट बिगड़ेगा। दूर से शोक समाचार मिल सकता है, धैर्य रखें। किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। भागदौड़ रहेगी।

कर्क कष्ट, भय, चिंता व तनाव का वातावरण बन सकता है। जीवनसाथी पर अधिक मेहरबान होंगे। कोर्ट व कचहरी के कार्यों में अनुकूलता रहेगी। लाभ में वृद्धि होगी।

सिंह तरक्की के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि व भवन संबंधी बाधा दूर होगी। आय में वृद्धि होगी। मित्रों के साथ बाहर जाने की योजना बनेगी। रोजगार प्राप्ति के योग हैं।

कन्या यात्रा सफल रहेगी। शारीरिक कष्ट हो सकता है। बेचैनी रहेगी। नई योजना बनेगी। लोगों की सहायता करने का अवसर प्राप्त होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

तुला अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेने की स्थिति बन सकती है। पुराना रोग बाधा का कारण बन सकता है। अपेक्षित कार्यों में विलंब हो सकता है।

वृश्चिक कोई राजकीय बाधा हो सकती है। जल्दबाजी में कोई भी गलत कार्य न करें। विवाद से बचें। काफी समय से अटका हुआ पैसा मिलने का योग है, प्रयास करें।

धनु किसी की बातों में न आएं। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। नवीन वस्त्राभूषण पर व्यय होगा। अचानक लाभ के योग हैं। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

मकर परिवार की आवश्यकताओं के लिए भागदौड़ तथा व्यय की अधिकता रहेगी। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में विशेष सावधानी की आवश्यकता है। कार्य पर ध्यान दें।

कुम्भ जोखिम व जमानत के कार्य टालें। शारीरिक कष्ट संभव है। व्यवसाय धीमा चलेगा। धनार्जन होगा। नौकरी में उच्चाधिकारी की नाराजी झेलनी पड़ सकती है।

मीन किसी अपरिचित की बातों में न आएं। धनहानि हो सकती है। थोड़े प्रयास से ही काम सफल रहेंगे। मित्रों की सहायता करने का अवसर प्राप्त होगा।

बॉलीवुड | मन की बात

सेंसर बोर्ड खत्म कर देना चाहिए : राम गोपाल वर्मा

सत्या और सरकार जैसी हिट फिल्में बनाने वाले डायरेक्टर राम गोपाल वर्मा चाहते हैं कि देश में सेंसर बोर्ड को खत्म कर दिया जाए। वह सेंसरशिप को दर्शकों का अपमान मान रहे हैं। सेंसर बोर्ड पर उन्होंने कई सवाल उठाए हैं। अपने एक्स (ट्विटर) अकाउंट पर एक पोस्ट के जरिए वह सेंसर बोर्ड पर अपनी भड़ास निकाल रहे हैं। एक्स (ट्विटर) अकाउंट पर साझा की गई पोस्ट में रामगोपाल वर्मा लिखते हैं, 'सेंसर पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। फिल्मों को सेंसर करना असल में दर्शकों का अपमान है। स्मार्टफोन, ग्लोबल स्ट्रीमिंग और असीमित जानकारी के दौर में यह सोचना कि सरकार की बनाई कोई कमेटी किसी सच के बारे में फिल्ममेकर के नजरिए से दर्शकों को बचा सकती है, न सिर्फ पुरानी सोच है बल्कि बेवकूफी भी है।' रामगोपाल वर्मा आगे लिखते हैं, 'असली पाखंड तो यह है कि अगर कोई वयस्क देश के नेता को चुनने, परिवार पालने और बिजनेस चलाने जितना समझदार है, तो वह खुद यह तय क्यों नहीं कर सकता कि उसे क्या देखना है? एक तरफ सरकार वयस्कों पर वोट देने के लिए भरोसा करती है, जिससे एक अरब से ज्यादा लोगों का भविष्य तय होता है। दूसरी तरफ उसे लगता है कि फिल्म का कोई सीन उन्हें बिगाड़ सकता है। यह समाज की सुरक्षा नहीं बल्कि उसे बच्चों जैसा समझने जैसा है। 18 साल का युवा नेता चुन सकता है लेकिन उसे यह तय करने के लिए किसी अनजान कमेटी मेंबर की जरूरत होती है कि कोई गाली सुनना या कोई शॉट देखना उसे बिगाड़ देगा या नहीं। फिल्म एक फिल्ममेकर के नजरिए से सुनाई गई ड्रामैटिक कहानी होती है और दर्शकों का हक है कि वे उससे सहमत हों या असहमत।' रामगोपाल वर्मा पोस्ट आगे बताते हैं कि सेंसर होने के बाद भी दर्शक उन सीन्स को देख ही लेते हैं।

सोनम बाजवा संग पंजाबी फिल्म करेंगे नवाजुद्दीन

नवाजुद्दीन सिद्दीकी इंडियन सिनेमा का एक बड़ा नाम हैं। उन्होंने अपने वर्सेटैलिटी से अपनी अलग पहचान बनाई है। लेकिन अब नवाजुद्दीन बॉलीवुड से इतर पंजाबी इंडस्ट्री में भी डेब्यू करने जा रहे हैं। खबरों के मुताबिक, वह पंजाबी भाषा की एक फिल्म से इंडस्ट्री में डेब्यू करने वाले हैं। इस फिल्म में उनके साथ अभिनेत्री सोनम बाजवा के प्रमुख रूप में नजर आने की संभावना है। वैरायटी इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस प्रोजेक्ट को गिप्पी ग्रेवाल का सपोर्ट मिलने की बात कही जा रही है। हालांकि, नवाजुद्दीन का रीजनल सिनेमा में यह पहला कदम नहीं है। वह पहले तेलुगु फिल्म सैंधव और तमिल फिल्म पेट्टा का हिस्सा रह चुके हैं, जिनमें उन्होंने रजनीकांत के साथ विलेन का रोल निभाया था। इसके बाद तुम्बाड 2 आने वाली है, जो 2018 की ओरिजिनल फिल्म का सीक्वल है। रिपोर्ट की मानें तो अब नवाज जल्द ही पंजाबी सिनेमा में अपनी शुरुआत करने वाले हैं। हालांकि, अभी तक इसको लेकर ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं हुई है। सोनम बाजवा के करियर की बात करें तो उन्होंने 2013 में पंजाबी फिल्म बेस्ट ऑफ लक से अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद सरदारजी 2, सुपर सिंह जैसी कई फिल्मों में काम किया। बाद में उन्हें हाउसफुल 5, बागी 4, एक दीवाने की दीवानियत और बॉर्डर 2 जैसे हिंदी प्रोजेक्ट्स भी मिले। नवाजुद्दीन को आखिरी बार इसी साल रिलीज हुई फिल्म 'मैं एक्टर नहीं हूं' में देखा गया था।

इंतजार खत्म, 23 जुलाई को रिलीज होगी 'जन नायकन'

साउथ अभिनेता थलापति विजय की आगामी फिल्म जन नायकन की रिलीज का इंतजार अब खत्म हुआ। फिल्म निर्माताओं ने आज सोशल मीडिया पर विजय की फिल्म जन नायकन का एक खास पोस्टर साझा किया और साथ ही रिलीज डेट से पर्दा भी उठाया।

आज जन नायकन के निर्माताओं ने विजय की फिल्म की रिलीज की घोषणा कर दी है। यह फिल्म 23 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस खुशखबरी से विजय के फैंस बेहद खुश हैं और साथ ही फिल्म के लिए काफी उत्साहित भी हैं।

पहले यह फिल्म 9 जनवरी को रिलीज होनी थी, लेकिन तमिलनाडु

विधानसभा चुनावों और सीबीएफसी से सर्टिफिकेट ना मिलने के चलते इसकी रिलीज डेट टलती गई। बहरहाल, अब विजय तमिलनाडु के मुख्यमंत्री बन चुके हैं। अब उनकी यह फिल्म 23 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

आज फिल्म जन नायकन के निर्माताओं ने आखिरकार इसकी रिलीज डेट की घोषणा के साथ एक खास पोस्टर भी ह्यह्यसाझा किया है। इस पोस्टर में विजय पुलिस वर्दी में स्टाइलिश अंदाज में नजर आ रहे हैं। इस पोस्टर में विजय के हाथ में एक पुलिसकर्मी की तरह बंदूक नहीं बल्कि तलवार नजर आ रही है, जो हर किसी का ध्यान अपनी ओर खींच रही है। सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन ने जन नायकन को ए सर्टिफिकेट दिया है। इसकी अवधि 3 घंटे 3 मिनट बताई जा रही है। जन नायकन में थलापति विजय, पूजा हेगड़े, बॉबी देओल और ममिता बैजू मुख्य भूमिकाओं में हैं। इस फिल्म का निर्देशन एच. विनोथ ने किया है। यह अभिनेता के रूप में थलपाति विजय की आखिरी फिल्म हो सकती है।

अजब-गजब | ये है दुनिया का सबसे श्रापित गांव!

इस गांव में हर शख्स है अंधा, कुत्तों, बिल्लियों गायों, पक्षियों और अन्य पशुओं का भी है यही हाल

कल्पना कीजिए एक ऐसे गांव की जहां किसी ने कभी सूरज की रोशनी नहीं देखी है। ऐसा नहीं है कि यहां सूरज नहीं उगता, लेकिन मेक्सिको के ओआक्साका प्रांत में बसा टिल्टेपेक गांव ठीक वैसा ही है। यहां पैदा होने वाला हर शिशु और हर जानवर कुछ समय बाद अपनी आंखों की रोशनी खो देता है। यह रहस्य सदियों से चला आ रहा है और इसे Village of the Blind भी कहा जाता है।

टिल्टेपेक गांव में करीब 300-400 लोग रहते हैं। यहां नवजात बच्चे आंखें खोलकर पैदा होते हैं, लेकिन कुछ दिनों या हफ्तों में उनकी रोशनी धीरे-धीरे कम होने लगती है और अंत में पूरी तरह चली जाती है। यही हाल गांव के कुत्तों, बिल्लियों, गायों, पक्षियों और अन्य जानवरों का भी है। स्थानीय लोग बताते हैं कि यह कोई प्राचीन अभिशाप है। किंवदंती है कि सदियों पहले गांव में एक खास पेड़ था। जिसने भी उस पेड़ को देखा, वह अंधा हो गया। आज भी कई लोग उस पेड़ या उसके आसपास की जगह को समस्या का कारण मानते हैं। जब मेक्सिको सरकार और वैज्ञानिक टीम ने जांच की तो कुछ रोचक तथ्य सामने आए। इसमें सबसे प्रमुख कारण बताया गया विषैले कीट। गांव में मौजूद कुछ विशेष प्रकार की मक्खियां ऐसी हैं जिनके संपर्क में आने से आंखों की रोशनी चली जाती है। कुछ अध्ययनों में जेनेटिक

कारण भी पाए गए। लंबे समय तक छोटे समुदाय में शादियां होने के कारण recessive genes मजबूत हो गए हैं, जिससे hereditary blindness फैल गया। वहीं पर्यावरणीय कारक जैसे पानी में रसायन, मिट्टी का प्रदूषण या स्थानीय पौधे भी इसके लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

अंधेपन के बावजूद गांववासी सामान्य जीवन जीते हैं। वे आवाज, स्पर्श, गंध और अन्य इंद्रियों का इस्तेमाल करके सब कुछ करते हैं। बच्चे विशेष तरीके से शिक्षा प्राप्त करते हैं। घरों में खिड़कियां कम होती हैं क्योंकि रोशनी की जरूरत नहीं पड़ती। सरकार ने कई बार गांव वालों को दूसरे जगह बसाने की कोशिश की, लेकिन वे अपनी मातृभूमि छोड़ना नहीं चाहते। नई जगह पर अनुकूलन ना हो पाने के कारण कई लोग वापस लौट आए। गांववासियों की मान्यता है कि यह पेड़ का अभिशाप है। लेकिन वैज्ञानिक इसे प्रकृति की गड़बड़ी या पर्यावरणीय समस्या मानते हैं। यह मामला hereditary blindness और पर्यावरण-स्वास्थ्य संबंधी अध्ययनों के लिए महत्वपूर्ण है। यह गांव सोशल मीडिया, यूट्यूब डॉक्यूमेंट्री और अंतरराष्ट्रीय मीडिया में बार-बार वायरल होता है। लोग इसे रहस्यमयी मानकर इसके बारे में जानना चाहते हैं। कई पर्यटक यहां आने की कोशिश करते हैं, लेकिन यहां तक पहुंचना काफी मुश्किल है।

दुनिया की इकलौती सड़क, जो बनी है 12 मंजिला अपार्टमेंट्स के ठीक ऊपर, सनसनाती हुई गुजरती हैं गाड़ियां!

बीजिंग। देश-दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में कई ऐसी इमारतें हैं, जिन्हें देखकर हैरानी होती है। इनमें से किसी बिल्डिंग के बीच से होकर ट्रेन गुजरती है, तो कोई जिद्दी इमारत सड़क के बीचों-बीच खड़ा होता है। ऐसे में आज हम आपको एक ऐसी सड़क के बारे में बताने जा रहे हैं, जो 12 मंजिले अपार्टमेंट्स के ठीक ऊपर बनी हुई है। जब इसके ऊपर से बड़ी-बड़ी गाड़ियां गुजरती हैं, तो नीचे बने घरों की दीवारें भी हिलने लग जाती हैं। इसके बावजूद भी इन घरों में रहने वाले लोग अपना मकान खाली नहीं करना चाहते। अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर ये सड़क है कहां? ऐसे में बता दें कि यह सड़क चीन के गुइयांग शहर में बना है। यह हाईवे किसी खाली जमीन या पहाड़ों के बीच से नहीं, बल्कि एक दर्जन से भी ज्यादा बहुमंजिला रिहायशी अपार्टमेंट्स के ठीक ऊपर से होकर गुजरता है। इस पुल का नाम शुइकोउसी ब्रिज है, जो आज के समय में चीनी तकनीक का एक शानदार उदाहरण है। जहां दुनियाभर के लोग अपने घरों के ऊपर से गाड़ियों के गुजरने की कल्पना भी नहीं कर सकते, वहीं चीन के हजारों लोग इस हाईवे के नीचे मजे से अपनी जिंदगी जी रहे हैं। शुइकोउसी ओवरपास का निर्माण साल 1997 में ही पूरा हो गया था। लेकिन इसके बनने के तुरंत बाद ही गुइयांग शहर के प्रशासन के सामने एक मुसीबत खड़ी हो गई। 40 लाख से ज्यादा की आबादी वाले इस शहर के बीचों-बीच गरीब और जरूरतमंद लोगों को सस्ते मकान देने के लिए जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा भी खाली नहीं बचा था। ऐसे में शहर को बाहर की तरफ फैलाने के बजाय प्रशासन ने इस जुगाड़ से उनके रहने की व्यवस्था कर दी। प्रशासन ने तय किया कि शहर के बीचों-बीच बने इस ऊंचे पुल के नीचे की खाली पड़ी जमीन का इस्तेमाल रिहायशी इमारतें बनाने के लिए किया जाएगा। पुल के पूरा होने के ठीक दो साल बाद, साल 1999 में इसके नीचे करीब 10 बहुमंजिला रिहायशी इमारतें खड़ी कर दी गईं, जिनमें से कुछ को बाद में बढ़ाकर एक दर्जन से अधिक कर दिया गया। इस प्रोजेक्ट का सबसे बड़ा फायदा यह था कि गरीब और विस्थापित लोगों को शहर के बिल्कुल बीचों-बीच सस्ते दाम पर रहने के लिए घर मिल गए, जहां से उनके लिए काम-धंधे पर जाना बेहद आसान था। इस फायदे के बदले इन मकानों में रहने वाले लोगों को एक समझौता भी करना पड़ा। चूंकि ये इमारतें सीधे पुल को छूते हुए ऊपर तक जाती हैं, इसलिए दिन-रात हाईवे पर दौड़ने वाले वाहनों का शोर और गाड़ियों के वजन से होने वाला वाइब्रेशन इन घरों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गया। शुरुआत में एक्सपर्ट्स को लगा था कि गाड़ियों की गड़गड़ाहट और हिलती दीवारों के कारण लोग यहां रहने से मना कर देंगे, लेकिन इसके बिल्कुल उलट हुआ। समय के साथ हजारों लोगों ने इस अनोखे माहौल में खुद को ढाल लिया और इस शोर-शराबे व कंपन को ही अपने घर की अनोखी पहचान मान लिया।

यूपी में एक और सरकारी कर्मी अधिकारी के शोषण का बना शिकार

एपीटीसी कमांडेंट सीतापुर के फॉलोअर की मौत

» पत्नी बोली- बंगले पर बुलाकर शारीरिक रूप से प्रताड़ित करते थे अधिकारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सीतापुर। यूपी में अधिकारियों से प्रताड़ित होकर जान देने वाले कर्मियों में कोई कमी नहीं आ रही है। ताजी घटना में सीतापुर में एक पुलिस फॉलोअर की संदिग्ध मौत के बाद उसकी पत्नी ने वरिष्ठ पुलिस अधिकारी पर अवैध हिरासत, मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना तथा आत्महत्या के लिए उकसाने के गंभीर आरोप लगाए हैं। ग्रामीणों ने कार्रवाई की मांग की है। पुलिस का कहना है कि शिकायत की जांच कर नियमानुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

खैराबाद थाना क्षेत्र के राजापुर चिलवारा गांव के निवासी थे शैलेन्द्र

कमांडेंट ने की शैलेन्द्र से पैसों की मांग

पत्नी का यह भी आरोप है कि कमांडेंट ने शैलेन्द्र से पैसों की मांग की और उनका मोबाइल फोन तथा आधार कार्ड सहित अन्य दस्तावेज भी अपने कब्जे में रख लिए। लगातार प्रताड़ना और दबाव से परेशान होकर शैलेन्द्र ने मंगलवार को विषाक्त पदार्थ खा लिया। परिजन उन्हें इलाज के लिए लखनऊ ले जा रहे थे, लेकिन रास्ते में उनकी मौत हो गई। सरिता पाल ने दावा किया कि चोरी के मामले में उनके पति का कोई नाम नहीं था। मुख्य आरोपी कोई दूसरा व्यक्ति था, जिसके पास से सामान भी बरामद हुआ था। इसके बावजूद उनके पति को निशाना बनाया गया।

पुलिसकर्मी उन्हें सादे कपड़ों में घर से जबरन उठा ले गए

आरोप है कि 25 जून को आवास से कुछ सामान गायब होने के शक में दो पुलिसकर्मी उन्हें सादे कपड़ों में घर से जबरन उठा ले गए। शैलेन्द्र को दो दिन तक अवैध हिरासत में रखकर पूछताछ की गई और उनके साथ मारपीट की गई। इसके बाद भी करीब 19 दिनों तक उन्हें रोज बंगले पर बुलाकर मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता रहा। पीड़िता का आरोप है कि प्रताड़ना की जानकारी किसी को देने पर पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी जाती थी।

“ मामले की जांच की जा रही : एसपी

घटना के विरोध में राजापुर चिलवारा गांव के बड़ी संख्या में ग्रामीण ट्रैक्टर-ट्रॉली से एसपी कार्यालय पहुंचे और दोषी अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। एसपी अंकुर अग्रवाल ने बताया कि मामले में शिकायती पत्र मिला है। आरोपों की जांच कराई जा रही है और जांच के आधार पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

खैराबाद थाना क्षेत्र के राजापुर चिलवारा गांव निवासी शैलेन्द्र पाल (25) की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के बाद मामला तूल पकड़ गया है। शैलेन्द्र की पत्नी सरिता पाल ने एपीटीसी कमांडेंट पर गंभीर आरोप लगाते हुए उन्हें आत्महत्या के लिए उकसाने, अवैध हिरासत में रखने और लगातार मानसिक व शारीरिक प्रताड़ना देने का आरोप लगाया है। उन्होंने आरोपी आईपीएस अधिकारी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर निलंबन की मांग की है। सरिता पाल के अनुसार, उनके पति एपीटीसी कमांडेंट के सरकारी आवास पर सफाई का कार्य करते थे।

पंजाब कांग्रेस में अब भी नहीं थमी रार

» चन्नी ने विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा से की मुलाकात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब कांग्रेस में 27 विधानसभा चुनावों से पहले नेतृत्व विवाद गहरा गया है, जहां पूर्व सीएम चरणजीत सिंह चन्नी ने विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा से मुलाकात की है। कांग्रेस आलाकमान ने मौजूदा अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वडिंग को पद पर बनाए रखने का फैसला किया है, जिसका चन्नी और कुछ वरिष्ठ नेता विरोध कर रहे हैं। इस आंतरिक कलह के बीच इंचार्ज भूपेश बघेल ने नेतृत्व में बदलाव की संभावना से इनकार किया है, जिससे पंजाब कांग्रेस में खींचतान जारी है। 27 के विधानसभा चुनावों से पहले पंजाब कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर चल रहे विवाद के बीच, पूर्व मुख्यमंत्री और प्रदेश कांग्रेस अभियान समिति के अध्यक्ष चरणजीत सिंह चन्नी ने चंडीगढ़ स्थित आवास पर पंजाब विधानसभा में विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा से मुलाकात की।

कांग्रेस नेतृत्व ने 1 जुलाई को घोषणा की कि अमरिंदर सिंह राजा वडिंग पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष बने रहेंगे। खबरों के अनुसार, चन्नी इस फैसले का विरोध कर रहे हैं और नेतृत्व में बदलाव चाहते हैं, कुछ वरिष्ठ नेता जालंधर के सांसद के अभियान का समर्थन भी कर रहे हैं। उम्मीद है कि अगले साल की शुरुआत में पंजाब में विधानसभा चुनाव होंगे और कांग्रेस इसके लिए तैयारी कर रही है। चुनावों के लिए कांग्रेस की नई टीम के ऐलान के बाद, बघेल ने चंडीगढ़ में छह दिन बिताए और कई नेताओं से मुलाकात की। आखिरी दिन उन्होंने चन्नी के नेतृत्व वाले नाराज़ नेताओं के एक समूह से भी मुलाकात की। पंजाब कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेताओं के नेतृत्व में बदलाव की मांग करने के बाद, खबर है कि कांग्रेस आलाकमान अलग-अलग विकल्पों पर विचार कर रहा है। मंगलवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात की। इस बैठक में वेणुगोपाल भी शामिल हुए।

फिर से टीएमसी को खड़ा करेंगी ममता

» अभिषेक बनर्जी को पूर्व सीएम का आशीर्वाद

» फेसबुक लाइव के जरिये दिया संदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक वीडियो संदेश में कहा कि राज्य और देश में अपनी राजनीतिक अहमियत फिर से हासिल करने के लिए उन्हें नए सिरे से शुरुआत करने की कोई चिंता नहीं है। उनका यह बयान ऐसे समय में आया है, जब उनकी बनाई गई तृणमूल कांग्रेस लगभग तीन गुटों में बंट गई है। उनके और अभिषेक का नेतृत्व वाला गुट अब पार्टी में असली लेकिन अल्पसंख्यक गुट बन गया है।

दूसरी ओर, विधायक ऋतब्रत बनर्जी के नेतृत्व वाला बागी गुट न केवल बंगाल विधानसभा में तृणमूल कांग्रेस विधायक दल का बहुमत वाला गुट है, बल्कि पार्टी की नई राष्ट्रीय कार्य समिति में भी बहुमत में है। इस समिति ने ममता की जगह वरिष्ठ विधायक अरूप रॉय को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया है। साथ ही, तृणमूल के कई सांसदों ने भी दिग्गज नेता काकोली घोष दस्तीदार और शताब्दी रॉय के नेतृत्व में त्रिपुरा स्थित एनसीपीआई की सदस्यता ग्रहण करके ममता को बड़ा सियासी झटका दिया। ममता ने फेसबुक लाइव के जरिए संदेश दिया। उन्होंने कहा कि वह सब कुछ नए सिरे से शुरू करेंगी, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने 1998 में कांग्रेस से अलग होकर तृणमूल की स्थापना की थी। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने हाल में हुए बंगाल विस चुनाव में तृणमूल को वोट दिया, उन्होंने पार्टी का पारंपरिक चुनाव चिह्न देखकर वोट दिया था, जो उन्हीं की सोच का नतीजा था। उन्होंने पार्टी के भीतर मौजूद इन गद्दारों की ओर से उन लोगों से माफी मांगी। उन्होंने कहा कि जब उन्होंने तृणमूल बनाने और लड़ने का फैसला किया था, तब वह अकेली थीं। अब उनके पास 28 सांसद और कई विधायक हैं, और अगर वह तब बिल्कुल शून्य से शुरुआत कर सकती थीं, तो 26 में भी निश्चित रूप से ऐसा कर सकती हैं।

मैं बीजेपी के अंत को देखने तक जिंदा रहुंगी

ममता ने कहा कि बीजेपी चाहती थी कि मुझे हार्ट अटैक आए, लेकिन मैं तब तक ज़िंदा रहूंगी जब तक आपका अंत न देख लूं। बुधवार को मित्रा ने ममता का खेमा छोड़कर रिताब्रत बनर्जी के नेतृत्व वाले बागी गुट का दामन थाम लिया। उन्होंने कहा कि उन्होंने सिर्फ़ विधानसभा में अपना कमरा बदला है। उन्होंने कहा, जो जाना चाहते हैं, वे जा सकते हैं और साथ ही कहा कि उनके पास एक संदेश है। उन्होंने दावा किया कि पार्टी चाहती थी कि उन्हें हार्ट अटैक आ जाए। ममता ने कहा कि बीजेपी चाहती थी कि मुझे हार्ट अटैक आए, लेकिन मैं तब तक जिंदा रहूंगी जब तक आपका अंत न देख लूं।

सजा काट रहे दो कैदियों को मिली शादी की मंजूरी

» राजस्थान हाईकोर्ट ने दिया आदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने एक अनोखे आदेश में जोधपुर ओपन जेल में उम्रकैद की सजा काट रहे दो कैदियों को शादी करने की इजाजत दे दी। कोर्ट ने कहा कि अपनी मर्जी से शादी करने वाले दो बालिग लोगों की शादी संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत मिले जीवन और व्यक्तिगत आजादी के अधिकार के दायरे में आती है। जस्टिस पुष्पेंद्र सिंह भाटी और जस्टिस प्रवीर भटनागर की बेंच ने यह आदेश नागौर के रहने वाले मूलाराम की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया।

मूलाराम ने शादी करने के लिए अपनी सजा को कुछ समय के लिए रोकने की मांग की थी। मूलाराम 16 फरवरी 17 से उम्रकैद की सजा काट रहा है। पुरुष कैदी मूलाराम को हत्या के एक मामले में उम्रकैद की सजा हुई, जबकि महिला कैद सीमा गाडसे गुलाब अपने पति के हत्या मामले में सजा काट रही है।

आईसीसी ने जारी किया वनडे विश्वकप का नया फॉर्मेट

» विशेषज्ञों को नहीं आया रास, बताया अव्यवस्थित, भारत-पाक और एसोसिएट टीमों पर उठे सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दुबई। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने अगले साल होने वाले वनडे विश्वकप के लिए नया प्रतियोगिता प्रारूप पेश किया है। हालांकि, इस बदलाव के बाद क्रिकेट जगत में इसकी आलोचना शुरू हो गई है। कई क्रिकेट विशेषज्ञों ने नए फॉर्मेट को जटिल बताते हुए एसोसिएट टीमों के साथ होने वाले व्यवहार पर सवाल उठाए हैं। आईसीसी के नए प्रारूप के अनुसार विश्वकप के लिए क्वालिफाई करने वाली 14 टीमों में सबसे निचले तीन स्थान पर रहने वाली टीमें पहले राउंड-रॉबिन सुपर सीरीज खेलेंगी।

इस सुपर सीरीज में शीर्ष पर रहने वाली टीम ही दूसरे चरण यानी ग्रूप स्टेज में पहुंचेगी। इसके बाद 12 टीमों को छह-छह टीमों के दो ग्रूप में बांटा जाएगा। दोनों ग्रूप में कुल 30 मुकाबले खेले जाएंगे। इसके बाद हर ग्रूप की शीर्ष तीन टीमें सुपर-7 चरण में पहुंचेंगी। सुपर-7 की सातवीं टीम दोनों ग्रूप की चौथे स्थान पर रहने वाली टीमों में बेहतर प्रदर्शन करने वाली होगी। सुपर-7 में सभी टीमें राउंड-रॉबिन प्रारूप में खेलेंगी और अंत में शीर्ष चार टीमें सेमीफाइनल में जगह बनाएंगी। क्रिकेट विशेषज्ञों ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि वनडे विश्व कप को 12 टीमों का बना दिया गया है और उसके साथ एक बेहद अजीब प्ले-इन ट्राई-सीरीज जोड़ दी गई है। उन्होंने इसे एक त्रासदी बताया। अंग्रेजी पत्रकार मैट रोलर ने कहा कि यह फॉर्मेट ऐसा लगता है जैसे 14 टीमों के विश्व कप को बिना सीधे कहे 12 टीमों का बनाने की कोशिश की गई हो। हालांकि, इस नए फॉर्मेट को लेकर अब तक किसी भी क्रिकेटर ने सार्वजनिक तौर पर कोई सवाल नहीं उठाया है। वहीं, एक अन्य विशेषज्ञ का मानना है कि इस बदलाव से एसोसिएट टीमों की हिस्सेदारी कम होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इससे भारत और पाकिस्तान के बीच दो या उससे अधिक मुकाबले कराने की संभावना भी बनाई गई है। उन्होंने पूरे फॉर्मेट को पूरी तरह अव्यवस्थित बताया।

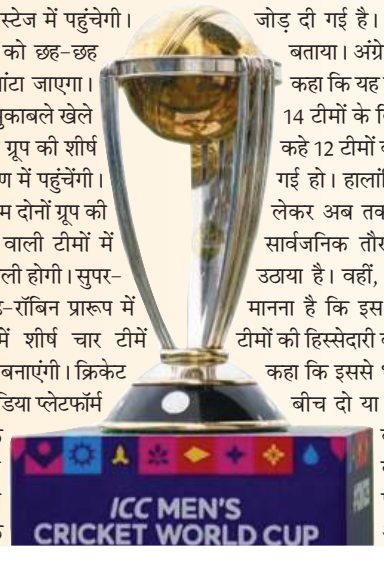

बीसीसीआई सचिव सैकिया आईसीसी की प्रशासन समीक्षा समिति के प्रमुख बने

एडिनबर्ग। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया को बुधवार को आईसीसी की नई उप समिति प्रशासन समीक्षा समिति का प्रमुख बनाया गया जिसने क्रिकेट वेस्टइंडीज के लिए12.82 मिलियन डॉलर के ऋण को भी मंजूरी दे दी। सैकिया के अलावा क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका के डॉक्टर मोहम्मद मूसाजी और आईसीसी के नव नियुक्त स्वतंत्र निदेशक डॉक्टर रोस रिवाज इस समिति में हैं। सैकिया नवगठित फ्रेंचाइजी लीग समिति में भी हैं जिसके अध्यक्ष बांग्लादेश के पूर्व कप्तान तामिम इकबाल हैं। समिति में क्रिकेट नामीबिया के डॉक्टर रूडी वान वूरेन, इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के रिचर्ड गूड और क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के टॉड ग्रीनबर्ग भी हैं। आर्थिक तंगी से जूझ रहे क्रिकेट वेस्टइंडीज की मदद के लिए ऋण को मंजूरी दी गई। आईसीसी ने संशोधित संविधान को लेकर क्रिकेट श्रीलंका द्वारा की गई प्रगति की भी समीक्षा की। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) के अध्यक्ष तमिम इकबाल की सदस्यों के पूर्णकालिक सदस्य निदेशक के रूप में नियुक्ति को भी मंजूरी दी गई।

एक तंज... और सियासत में मचा तूफान

सीता के पति का नाम लेकर, नीता के पति के लिए काम कर रही है सरकार
काक्रोच जनता पार्टी के कार्यक्रम में कामरा के व्यंग ने मचा दी खलबली

वांगचुक की भूख हड़ताल का 19वां दिन, सरकार बनी मौन, सीजेपी के आंदोलन का सियासी दलों का समर्थन

» विपक्ष से लेकर सोशल मीडिया पर मोदी सरकार निशाने पर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कुणाल कामरा ने फिर वही किया जिसके लिए वह जाने जाते हैं। उन्होंने दिल्ली के जंतर मंतर पर चल रहे काक्रोच जनता पार्टी के आंदोलन में शामिल होकर एक ऐसी लाइन बोली जिसने राजनीति के पूरे इकोसिस्टम को हिला दिया। सीजेपी के मंच पर माइक था सामने आंदोलन कर रहे लोग और फिर आया वह वाक्य जिसने सोशल मीडिया की टाइमलाइन से लेकर टीवी स्टूडियो तक आग लगा दी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तंज कसते हुए कामरा ने कहा कि सीता के पति का नाम लेकर नीता के पति के लिए काम कर रहे हैं। बस इतना कहना था कि तालियां भी बजीं ट्रोल आर्मी भी सक्रिय हुयी और समर्थकों ने इसे सत्ता पर सबसे तीखा व्यंग्य बताया तो विरोधियों ने इसे मर्यादा की सीमा लांघने वाला हमला करार दिया। वहीं सोनम वांगचुक की अनशन अभी चल रही है। फिलहान अनशन से न हटने का फै सला किया है। उन्होंने लोगों से 2० जुलाई को संसद चलने को कहा है। इस बीच दिल्ली हाईकोर्ट ने डॉक्टरों से उनकी नियमित जांच करने को कहा है।

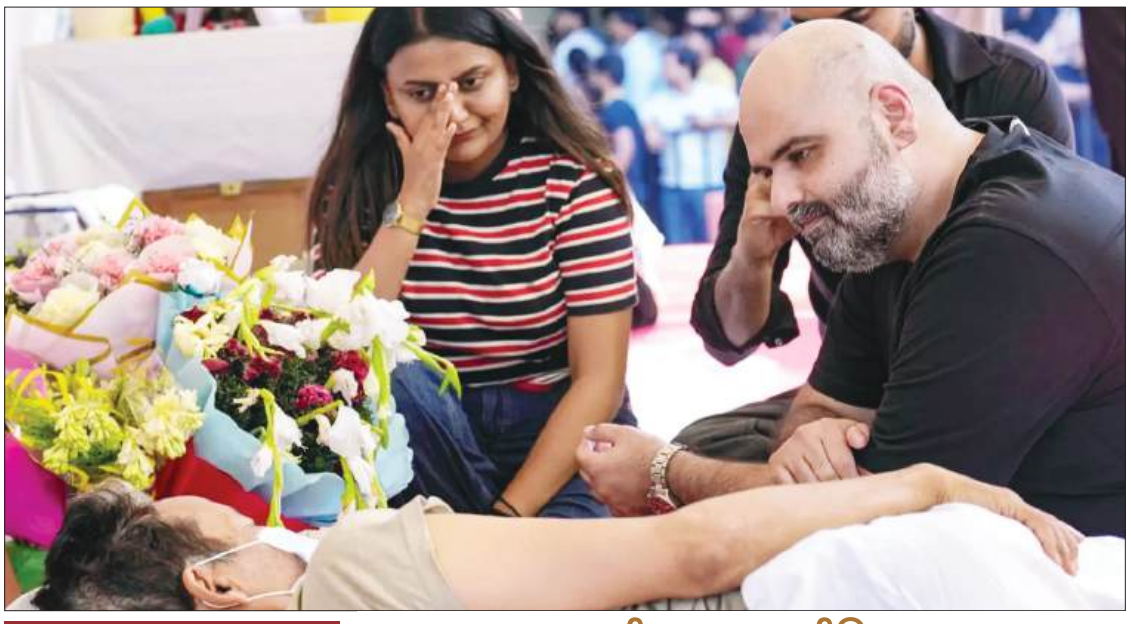

चुनाव नहीं लड़ते कामरा

कामरा की राजनीति अलग है। वह चुनाव नहीं लड़ते घोषणापत्र नहीं लिखते और प्रेस कॉन्फ्रेंस भी नहीं करते। उनका हथियार एक माइक्रोफोन और कुछ वाक्य हैं। लेकिन यही कुछ वाक्य कई बार नेताओं के घंटों लंबे भाषणों से ज्यादा राजनीतिक हलचल पैदा कर देते हैं। यही वजह है कि उनका हर नया शो केवल कॉमेडी नहीं बल्कि राजनीतिक प्रतिक्रिया का इंतजार भी बन जाता है।

व्यंग्य का तीर या राजनीतिक बारूद?

भारतीय राजनीति में आरोप नए नहीं हैं। विपक्ष लंबे समय से सरकार पर बड़े उद्योग समूहों के पक्ष में नीतियां बनाने का आरोप लगाता रहा है। सरकार हर बार इन आरोपों को खारिज करती रही है और कहती है कि उसके फैसले देश की अर्थव्यवस्था और निवेश को मजबूत करने के लिए हैं। कामरा ने इसी राजनीतिक आरोप को एक व्यंग्यात्मक पंक्ति में समेटने की कोशिश की। यह पहला मौका नहीं है जब कुणाल कामरा किसी राजनीतिक बयान को लेकर चर्चा में आए हों। वह इससे पहले भी कई मामलों में विवादों का सामना कर चुके हैं। महुलराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री (तत्कालीन) एकनाथ शिंदे पर की गई टिप्पणी को लेकर उनके खिलाफ राजनीतिक विरोध हुआ। उनके शो रद्द करने की मांग उठी और कानूनी कार्रवाई भी हुई। इसके अलावा वह कई बार केंद्र सरकार भाजपा और अन्य राजनीतिक नेताओं पर अपने व्यंग्य के कारण विवादों में रहे हैं। यही वजह है कि उनका हर नया बयान केवल मनोरंजन की खबर नहीं रह जाता बल्कि राजनीतिक विमर्श का हिस्सा भी बन जाता है।

सीधे रिलायंस समूह पर हमला

कुणाल कामरा की ताजा टिप्पणी का ज्यादा शोर इसलिए भी सुनाई दे रहा है क्योंकि यह ऐसे समय में आया है जब केंद्र सरकार और बड़े उद्योग समूहों के रिश्तों को लेकर विपक्ष लगातार हमले कर रहा है वह सवाल उठा रहा है। पिछले कई वर्षों से कांग्रेस नेता राहुल गांधी समेत विपक्ष के अनेक नेताओं ने संसद से लेकर चुनावी सभाओं तक यह आरोप लगाया है कि केंद्र सरकार की आर्थिक नीतियों से चुनिंदा बड़े कॉरपोरेट घरानों को असमान रूप से लाभ मिला है। दूसरी ओर केंद्र सरकार और भारतीय जनता पार्टी इन आरोपों को लगातार राजनीतिक प्रचार बताती रही है। सरकार का कहना है कि उसकी आर्थिक नीतियां किसी एक उद्योग समूह के लिए नहीं बल्कि निवेश रोजगार विनिर्माण और बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने के लिए बनायी गयी हैं। भाजपा नेताओं का तर्क रहा है कि देश में सड़क रेल बंदरगाह रक्षा उत्पादन डिजिटल अर्थव्यवस्था और ऊर्जा क्षेत्र में बड़े निवेश के बिना तेज आर्थिक विकास संभव नहीं है। सरकार यह भी कहती रही है कि परियोजनाएं तय नियमों और निविदा प्रक्रियाओं के तहत दी जाती हैं तथा किसी भी कारोबारी समूह के खिलाफ या पक्ष में राजनीतिक आधार पर निर्णय नहीं लिए जाते। यही वह पृष्ठभूमि है जिसमें कामरा का व्यंग्य सामने आया। उन्होंने किसी नीति बजट या सरकारी योजना का तकनीकी विश्लेषण नहीं किया बल्कि विपक्ष के लंबे समय से लगाए जा रहे आरोपों को एक प्रतीकात्मक व्यंग्यात्मक और बेहद संक्षिप्त वाक्य में पिरोने की कोशिश की। यही वजह है कि उनका बयान महज एक कॉमेडी पंचलाइन बनकर नहीं रह गया बल्कि उसी पुराने राजनीतिक विवाद का नया संस्करण बन गया जो वर्षों से भारतीय राजनीति का हिस्सा रहा है।

सरकारी डॉक्टर सोनम वांगचुक की नियमित जांच करें : दिल्ली हाईकोर्ट

दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय और न्यायमूर्ति तेजस करिया की अदालत इस मामले की सुनवाई की। अदालत ने कहा कि सॉलिसिटर जनरल के द्वारा दिए गए आश्वासन से हम संतुष्ट हैं। यह निर्देश दिए जाते हैं कि सरकारी डॉक्टरों द्वारा सोनम वांगचुक्की नियमित जांच की जाए और डॉक्टरों की सलाह पर उचित हस्तक्षेप किया जाए। अदालत ने जनहित याचिका का निस्तारण किया। कोर्ट में सरकारी वकील की दलील,दिल्ली सरकार और केंद्र सरकार की तरफ से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश हुए। तुषार मेहता ने अदालत को बताया कि सोनम का स्वास्थ्य नियमित तौर पर चेक हो रहा है। अदालत ने पूछा कि क्या सरकारी डॉक्टर सोनम वांगचुक की जांच कर रहे हैं। उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि नहीं उनकी तरफ से जब भी हमें अनुमति जाएगी सरकारी डॉक्टर उनकी नियमित जांच करना शुरू कर देंगे। तुषार मेहता ने अदालत को आश्वासन दिया कि अब सरकारी चिकित्सक उनकी नियमित जांच करेंगे। आवश्यकता पड़ने पर उचित कदम उठाए जाएंगे। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता के आश्वासन के बाद अदालत ने कहा की प्रत्येक नागरिक का जीवन कीमती है। किसी भी व्यक्ति को इस प्रकार अपने जीवन को अंत करने के लिए नहीं देखा जा सकता।

अदालत ने कहा- प्रत्येक नागरिक का जीवन कीमती

गिरते स्वास्थ्य के बीच 20 जुलाई को संसद चलो का आह्वान

ब्लड शुगर 80 एमजी/डीएल और ऑक्सीजन सैचुरेशन 97प्रतिशत होने के बाद भी देश के जानेमाने जलवायु कार्यकर्ता नौजवानों के साथ खड़े हैं और लड़ाई को आगे जारी रखने की बात कही है। उधर देश के जानेमाने लोगों ने उनसे अनशन तोड़ने की अपील की है। हालांकि भूख हड़ताल के 19 दिन होने केबाद भी सरकार को भी प्रतिनिधि उनकी सुधि लेने नही गया है। सरकार की हठधर्मिता का विपक्ष तो आलोचना कर ही रहा है। अब सोशल मीडिया पर भी लोग मोदी सरकार को कोस रहे हैं। वहीं डॉक्टरों ने बताया कि वे होश में हैं और मानसिक रूप से सतर्क हैं, लेकिन उन्हें लगातार निगरानी की आवश्यकता है। कॉक्रोच जनता पार्टी द्वारा जारी नवीनतम मेडिकल बुलेटिन के अनुसार, 59 वर्षीय वांगचुक बहुत कमजोर हैं और 24 घंटे मेडिकल निगरानी में हैं। उनका वजन घटकर 57.15 किलोग्राम हो गया है; पिछले 24 घंटों में इसमें 400 ग्राम की कमी आई है और उपवास शुरू करने के बाद से अब तक लगभग 8.9 किलोग्राम वजन कम हुआ है। उनका ब्लड प्रेशर 105/76 एमएमएचजी ब्लड शुगर 80 एमजी/डीएलऔर ऑक्सीजन सैचुरेशन 97प्रतिशत दर्ज किया गया। डॉक्टरों ने बताया कि वे होश में हैं और मानसिक रूप से सतर्क हैं, लेकिन उन्हें लगातार निगरानी की आवश्यकता है। अपने अभियान को और तेज़ करते हुए, सीजेपी ने एक दिन की सामूहिक भूख हड़ताल की घोषणा की है। साथ ही, उन्होंने नागरिकों से 20 जुलाई को संसद मार्च में शामिल होने की अपील दोहराई है। वे एक पारदर्शी परीक्षा प्रणाली, बार-बार पेपर लीक होने के लिए जवाबदेही और शिक्षा मंत्री को हटाने की मांग कर रहे हैं।

वीडियो संदेश में अपनी बात रखी

श्री वांगुचक ने एक वीडियो संदेश में कहा कि मेरी हालत अच्छी नहीं है, लेकिन बहुत खराब भी नहीं है। कमजोर आवाज और ढलते शरीर के साथ यह बात शिक्षाविद और सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने कल देर रात जंतर-मंतर से ये वीडियो जारी की। नीट परीक्षा में हुई कथित गड़बड़ियों और पेपर लीक मामले को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग पर अड़े वांगचुक की अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल आज 19वें दिन में प्रवेश कर चुकी है। इस आंदोलन को 19 जून को कॉक्रोच जनता पार्टी (सीजेपी) नाम के एक ऑनलाइन व्यंग्यात्मक ग्रुप ने अपने फाउंडर अभिजीत दिपके की अगुवाई में शुरू किया था, जो अब एक बड़े जनांदोलन का रूप ले चुका है। वीडियो मैसेज में वांगचुक ने समर्थकों से यह भी आग्रह किया कि वे उनसे उपवास खत्म करने के लिए न कहें, बल्कि 20 जुलाई को संसद तक संगठन के नियोजित चलो संसद मार्च में शामिल हों। उन्होंने कहा, मुझसे उपवास तोड़ने के लिए कहने के बजाय, कृपया 20 जुलाई को मेरे साथ शामिल हों... संसद तक शांतिपूर्ण मार्च में।

अन्य छात्र नेता भी अनशन में दे रहे साथ

इस विरोध प्रदर्शन में वांगचुक अकेले नहीं हैं। छात्र संगठनों के सदस्यों सहित कई अन्य लोग भी जंतर-मंतर पर भूख हड़ताल पर हैं। एक अलग मंच पर, ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन के नेता नेहा, मनीष और आमीन ने खराब होती सेहत के बावजूद अपना उपवास जारी रखा। उपवास के दौरान नेहा का वजन 5.85 किलोग्राम कम हुआ है, जबकि मनीष और आमीन का वजन क्रमशः 8.2 किलोग्राम और 8.3 किलोग्राम कम हुआ है। तीनों का ब्लड शुगर लेवल कम दर्ज किया गया है। छात्र संगठन ने यह भी बताया कि विरोध प्रदर्शन के दौरान तबीयत बिगड़ने के बाद जेएनयूएसयू के संयुक्त सचिव दानिश, बराक हॉस्टल के अध्यक्ष ऋषिकेश और दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र नेता दीपक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। राजनीतिक नेताओं ने वांगचुक से भूख हड़ताल खत्म करने की अपील की।

शशि थरूर ने वांगचुक से अनशन खत्म करने को कहा

इस विरोध-प्रदर्शन को राजनीतिक समर्थन भी मिला है। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने वांगचुक से अपना अनशन खत्म करने की भावुक अपील की। उन्होंने कहा कि इस अनशन ने देश की अंतरात्मा को जगा दिया है और छात्रों के मुद्दों की लड़ाई अब संसद में ले जानी चाहिए। थरूर ने एक खुले पत्र में लिखा, श्री सोनम वांगचुक-जी से मेरी दिली अपील है- कृपया अपना अनशन खत्म करें। आपने देश की अंतरात्मा को जगा दिया है; अनशन का मकसद यही होता है। आगे के लंबे सफर के लिए भारत को आपकी आवाज़ की ज़रूरत है।

टीएमसी, सपा, शिवसेना-यूबीटी व आप भी साथ में

इससे पहले तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी, समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव, शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे और आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भी वांगचुक से अनशन खत्म करने की अपील की थी। वहीं, अभिनेत्री ज़ीनत अमान ने सरकार से बातचीत शुरू करने की अपील की। गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह वाघेला और अभिनेत्री स्वरा भास्कर ने भी जंतर-मंतर पर विरोध स्थल का दौरा किया और अपना समर्थन जताया। उधर पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों में अभिनेता नसीरुद्दीन शाह और रत्ना पाठक शाह, लेखिका अरुंधति रॉय, अर्थशास्त्री ज्यां द्रेज़, शिक्षाविद जयंती घोष, स्कॉलर निवेदिता मेनन और शिक्षाविद अनुराधा चेनॉई शामिल थे। उन्होंने कहा कि वे प्रधान के इस्तीफ़े की मांग का पूरा समर्थन करते हैं, लेकिन प्रदर्शनकारियों से अपील की कि वे आगे की लंबी और ज़्यादा मुश्किल लड़ाई के लिए अपनी ताकत बचाकर रखें।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज़ नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा